

भारतीय वाणिज्य

वर्ष 1, अंक 1, प्रवेशांक

Title Code : No. UPBIL05252

मूल्य 10/-

अक्टूबर, 2023



वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

G20 के बाद अब P20





Birthday, reception, Ring ceremony, Haldi, Anniversary, college party, School Function, Bachelor, Co-operate function, any kind of function space available

200-250 PERSON GATHERING SPACE

Discount start from

20%

BOOK NOW

7048967523

2nd Floor, Aggarwal plaza,
near gulmohar garden,
rajnagar extension

भारतीय वाणिज्य

प्रधान सम्पादक

प्रबंध सम्पादक

समाचार सम्पादक

डॉ. राजवीर सिंह

डी.के. भास्कर

तरुण गौतम

सम्पादकीय सलाहाकार

सीमा बंसल

सोमिल बंसल

सोनू सागर

जतिन गौतम

कर्मशील भारती

डॉ चरण सिंह

मुख्यपृष्ठ एवं एड क्रिएटिव

ग्राफिक डिजाइनर

गाजियाबाद

अयोध्या फैजाबाद

उत्तरांचल

गोपाल सिंह

ब्यूरो चीफ

गीता रानी

जुगनू गौतम

हरिओम गौतम

वितरण व्यवस्था

वसु वर्मा

विधिक सलाहाकार

मनमोहन सिंह

एडवोकेट

विकास त्यागी

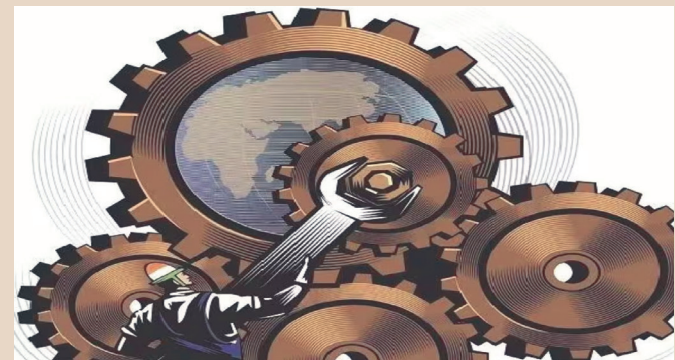
एडवोकेट

मनोज कुमार

एडवोकेट

प्रशांत कुमार

एडवोकेट



...कपट भी दे रहा रफ्तार

पेज: 8 बढ़ सकता है नीतिगत जोखिम

पेज: 9



चावल पर प्रतिबंध का प्रभाव

पेज: 11 रजनी का कमाल और गदर 2 का धमाल

पेज: 12



सिगरेट जितना ही हानिकारक

पेज: 15



दूध के नाम पर जहर पीता देश

पेज: 46



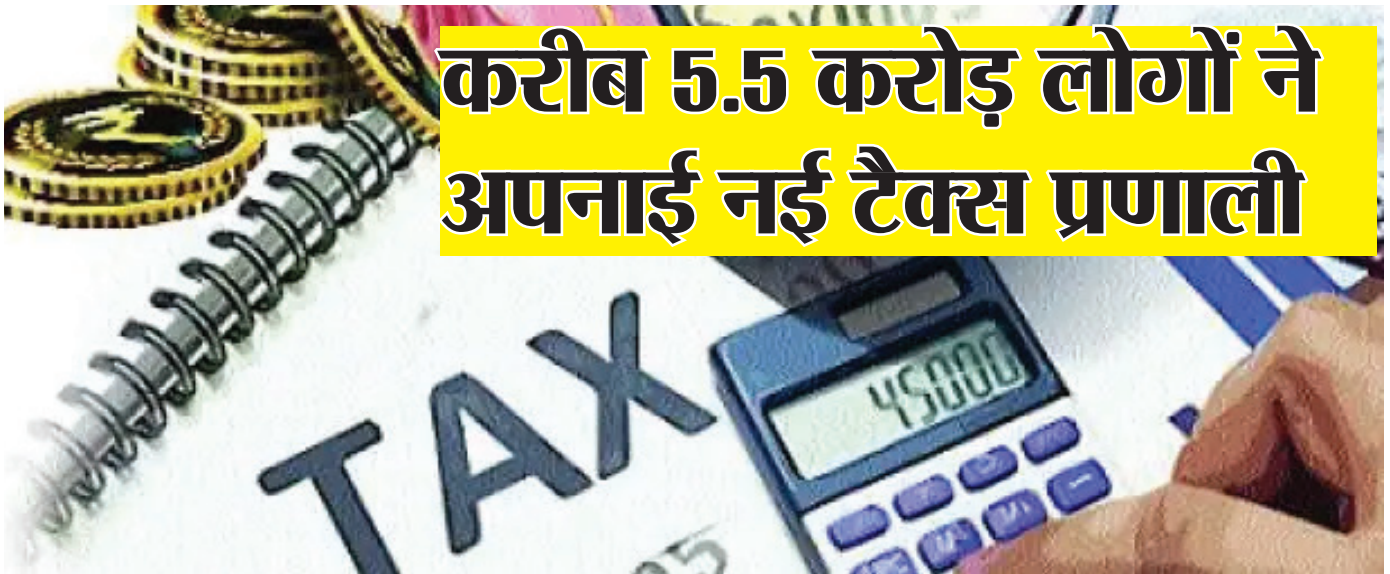
एम.एस.एम.ई. क्या है

पेज: 32

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक राजवीर सिंह द्वारा सुभाषिणी ऑफसेट प्रिन्टर्स एफ-10, पटेल मार्ग, तृतीय जगदीश नगर, गाजियाबाद से मुद्रित एवं 354, गली नम्बर 4, जय प्रकाश नगर दौलत पूरा से प्रकाशित। सम्पादक: राजवीर सिंह Title Code : No. UPBIL05252

पता: 1603/115 दूसरी मंजिल गणेश पूरा-ए त्रिनगर दिल्ली- (110035) दूरभाष: 9810857360, ईमेल-bharatiyavani1@gmail.com वेबसाइट: www.....com

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने निजी हैं। सभी प्रकार के वाद-विवाद का न्यायक्षेत्र गाजियाबाद होगा। उपरोक्त सभी पदाधिकारी अवैतनिक हैं।



करीब 5.5 करोड़ लोगों ने अपनाई नई टैक्स प्रणाली

आयकर विभाग के वित्त वर्ष 2023 के आंकड़ों से पता चलता है कि कुल 4.84 करोड़ करदाताओं की कर योग्य आय 5 लाख रुपये तक थी

● श्रीमी चौधरी

राजस्व विभाग के शुरूआती अनुमान के मुताबिक तकरीबन 5.5 करोड़ करदाता नई कर प्रणाली में चले गए हैं। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बिजनेस स्टैंडर्ड को बताया कि इनमें से अधिकतर करदाताओं की सालाना कर योग्य आय 7 लाख रुपये तक है।

आंकड़ा अहम है क्योंकि सरकार ने इस साल के बजट में कुछ बदलावों के साथ नई कर व्यवस्था को अधिक आकर्षक बनाने की कोशिश की। ऐसा इसलिए करना पड़ा क्योंकि 2020-21 में इस योजना की शुरूआत के बाद से ज्यादातर करदाता इससे दूर ही रहे थे।

एक सूत्र ने कहा, ह्याऐसी कोई वजह ही नहीं है कि 5.5 करोड़ लोग नई कर प्रणाली नहीं अपनाएंगे। 7.5 से 8 लाख रुपये या 10 लाख रुपये तक सालाना कमाई करने वाले अधिकतर युवा करदाता लचिले और स्पष्ट तरीके से कर भरना पसंद करते हैं। वे यह भी देखना चाहते हैं कि नई कर प्रणाली उनके लिए कारगर है या नहीं। उनके पास पुरानी व्यवस्था में लौटने का विकल्प तो होता ही है। वास्तविक आंकड़े अगले आकलन वर्ष (आकलन वर्ष 2024-25) में ही पता चलेंगे, जब कर रिटर्न में चालू वित्त वर्ष की आय, कर देनदारी आदि दिखेगी।

आयकर विभाग के वित्त वर्ष 2023 के आंकड़ों से पता चलता है कि कुल 4.84 करोड़ करदाताओं की कर योग्य आय 5 लाख रुपये तक थी। 1.12 करोड़ से अधिक लोगों की कर योग्य आय 5 लाख से 10 लाख रुपये थी, जबकि 10 लाख से 20 लाख रुपये के बीच कर योग्य आय वाले करदाताओं की संख्या 47 लाख थी। मध्य-उच्च आय वर्ग श्रेणी (20 लाख से 50 लाख रुपये) के करदाताओं की संख्या 20 लाख रही, जबकि 50 लाख से 1 करोड़ रुपये के बीच कर योग्य आय वाले 3.8 लाख करदाता थे। इसी तरह 2.6 लाख करदाताओं की कर योग्य आय 1 करोड़ रुपये से अधिक थी।

नई कर प्रणाली में पुरानी प्रणाली की तरह राहत और छूट का विकल्प नहीं था। इस साल के बजट में इसमें कुछ बदलाव किए गए थे, जिनका मकसद वेतनभोगी करदाताओं को नई कर प्रणाली में लाना था। नई कर प्रणाली को अब व्यक्तिगत करदाताओं के लिए डिफॉल्ट बना दिया गया है। नई कर व्यवस्था के तहत 7 लाख रुपये तक की सालाना आय वालों पर कोई कर नहीं लगेगा। साथ ही 50,000 रुपये की मानक कटौती मिलेगी और बुनियादी छूट सीमा बढ़ाकर 3 लाख रुपये कर दी गई है।

नई कर व्यवस्था 1 अप्रैल से लागू हो चुकी है।

ऐसे में नियोक्ताओं ने पूछा कि वे कौन सी प्रणाली चुन रहे हैं ताकि उनके वेतन में उसी हिसाब से कर कटौती की जा सके।

एक चार्टर्ड अकाउंटेंट के अनुसार यदि किसी कर्मचारी ने अपनी पसंद नहीं बताई तो नई संशोधित कर व्यवस्था के हिसाब से ही उसके वेतन से टीडीएस कट जाएगा। चार्टर्ड अकाउंटेंट ने बताया कि शुरू में कुछ करदाता भ्रमित दिख रहे थे। मगर कुछ करदाता इसे आजमाने और यह देखने के लिए तैयार थे कि पुरानी प्रणाली से फायदेमंद है या नहीं। सरकार का शुरूआती अनुमान सही साबित होता है तो 50 फीसदी से अधिक करदाताओं ने नई प्रणाली चुन ली है।

राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा ने बजट के बाद बातचीत में कहा था कि निवेश एवं बचत के लिए नई पीढ़ी के पास तमाम विकल्प हैं, जिनका मकसद कर बचत होना जरूरी नहीं है। ऐसे में कर बचाने के उद्देश्य से की जाने वाली बचत में कमी आई है। उन्होंने कहा था कि 50 फीसदी से अधिक करदाता नई कर व्यवस्था की ओर रुख करेंगे। दाखिल किए गए आयकर रिटर्न की संख्या 6.77 करोड़ से अधिक है, जो अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। यह एक साल पहले के 5.83 करोड़ के मुकाबले 16 फीसदी अधिक है।



संपादक की कलम से



डॉ. राजवीर सिंह

प्रधान सम्पादक

किसकी नाकामी भारत के लिए बड़ा मौका

चंद्रयान मिशन-3 ने 14 जुलाई को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से उड़ान भरा था. 40 दिनों की लंबी यात्रा के बाद 23 अगस्त यह चंद्रयान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की कोशिश करेगा. इसरो के चंद्रयान-1 के मून इम्पैक्ट प्रोब, चंद्रयान-2 के विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर को भी उसी क्षेत्र में उतरने के लिए भेजा गया था. अब चंद्रयान 3 भी यहीं उतरने की कोशिश करेगा. हालांकि इससे पहले दोनों मौकों पर नाकामी हाथ लगी थी. चंद्रयान-1 का मून इम्पैक्ट प्रोब, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया. जबकि चंद्रयान-2 के लैंडर से सॉफ्ट लैंडिंग के आखिरी मिनट में सिग्नल मिलना बंद हो गया था.

लेकिन एक बार फिर चंद्रयान-3 के साथ इसरो भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बनाने की कोशिश कर रहा है.

वैसे 11 अगस्त को रूस द्वारा लॉन्च किया गया लूना 25 भी चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की तैयारी कर रहा था, जो रविवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया है. लेकिन इसरो को उम्मीद है कि चंद्रयान-3 अपने मिशन में कामयाब होगा. अंतरिक्ष की खोज करने वाले देशों के बीच अंतरिक्ष के रहस्यों को जानने की एक होड़ रही है. सौर मंडल में चंद्रमा पृथ्वी का सबसे निकटतम खगोलीय पिंड है. चंद्रमा पर पहुँचने को लेकर अमेरिका और रूस में आपसी होड़ रही और कहा जा सकता है कि अमेरिका और रूस के बीच अंतरिक्ष युद्ध दूसरे विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ था. तत्कालीन सोवियत रूस ने 1955 में सोवियत अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू किया था. इसके तीन साल बाद अमेरिका ने 1958 में नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एजेंसी यानी नासा की शुरूआत की. 14 सितंबर, 1959 को पहला मानव निर्मित यान चंद्रमा पर उतरा. तत्कालीन सोवियत रूस का लूना-2 अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर सफलतापूर्वक उतरा.

इस प्रकार लूना 2 ने चंद्रमा पर उतरने वाली पहली मानव निर्मित वस्तु के रूप में इतिहास रचा. लूना 2 ने चंद्रमा पर उतरने के बाद, उसकी सतह, विकिरण और चुंबकीय क्षेत्र के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की. इस सफलता ने चंद्रमा पर और अधिक प्रयोग करने तथा अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने का रास्ता बनाया. मिशन चंद्रमा के भूमध्य रेखा के करीब ही उतरे हैं.



2027-28 तक भारतीय प्लास्टिक बाजार 10 लाख करोड़

भारत में वैश्विक प्लास्टिक सप्लायर के रूप में उभरने की क्षमता है और घरेलू प्लास्टिक बाजार 2027-28 तक तीन गुना से अधिक होकर 10 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी।

ऑल इंडिया प्लास्टिक मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन के अनुसार भारत में का आकार 3.5 लाख करोड़ रुपये है। घरेलू बाजार में प्लास्टिक की वृद्धि के अलावा विदेशों में उत्पादों का निर्यात भी मौजूदा 40,000 करोड़ रुपये से एक लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद थी।



एसोसिएशन के अध्यक्ष मयूर डी शाह ने कहा

कि भारतीय प्लास्टिक उद्योग में क्षमताएं हैं। अक्लूटअ ने आयात प्रतिस्थापन के लिए 553 प्लास्टिक उत्पादों की पहचान की है, जिनका आयात कुल 37,500 करोड़ रुपये का है।

शाह ने कहा, ह्यभारत में वैश्विक प्लास्टिक आपूर्तिकर्ता के रूप में उभरने की भी क्षमता है। सरकार तथा उद्योग जगत के लोग वृद्धि बढ़ाने तथा भारतीय प्लास्टिक उद्योग को विश्व स्तर पर स्रोत का केंद्र बनाने के लिए एक स्थायी वातावरण सुनिश्चित करने को लेकर मिलकर काम कर रहे हैं।

अगले साल सोने की कीमतों में दिख सकती है तेजी

विश्व स्वर्ण परिषद के मुख्य कार्याधिकारी (उएड) डेविड टैट का मानना है कि कि सोने की कीमतों में आगे भी चमक बनी रहेगी। इंडियन गोल्ड कॉन्फ्रेंस के लिए कोलकाता पहुंचे डेविड ने वीडियो साक्षात्कार में ईशिता आचान दत्त से स्व-नियमन संगठन, सोने की मांग और कीमतों सहित तमाम पहलुओं पर बात की। पेश हैं मुख्य अंश :

स्व-नियमन महंगी प्रक्रिया है और आगे चलकर डब्ल्यूजीसी इसके लिए पैसे का प्रबंध

करेगा। हम इस साल और आगामी वर्षों के लिए फंडिंग का निर्धारण करने की प्रक्रिया में हैं। यह महत्वपूर्ण है कि उद्योग एक निकाय के अंतर्गत एकजुट हो। इसके लिए मेरा दृष्टिकोण यह है कि दुनिया भर में उभरने वाले अन्य सभी स्व-नियमन संगठन स्वर्ण उद्योग के लिए एक शीर्ष निकाय बनाने में अपना योगदान दें। अगर 2024 के लिए धन की औपचारिक मंजूरी इस साल के अंत तक मिल जारी है तो स्व-नियमन संस्था अगले साल के मध्य से काम करने लगेगी।



NEED A TUTOR?

Homework trouble? Preparing for an exam?
We will help you master any subject, at any level!

Brilliant Brains Consultant

Educational Consultant & Home Tuition Provider

MONDAY - SATURDAY | 9AM - 9PM

Tutor available for All classes and Subjects in DELHI NCR

! CALL US AT **9650383179**
9625076016

BRILLIANT BRAINS CONSULTANT

Home teacher available for Play group, Nursery, KG (Phonic sound, hand griping, art, craft, colouring, etc) in

DELHI NCR by professional and experienced teachers

Contact -
9650383179
Mr.Somil
9625076016
Dr.Seema



भारत का विदेशी व्यापार 2023 के पहले 6 महीने में 800 अरब डॉलर के पार

भारत के सर्विस सेक्टर में वृद्धि ने वैश्विक मांग में मंदी के बावजूद 2023 की पहली छमाही के दौरान देश के वस्तुओं व सेवाओं के कुल निर्यात और आयात को 800 अरब डॉलर के आंकड़े के पार पहुंचाने में मदद की। हालांकि पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में इसमें 2.5 प्रतिशत की गिरावट आई है। शोध संगठन जीटीआरआई ने अपनी एक रिपोर्ट में यह बात कही। ह्यांग्लोबल ट्रेड रिसर्च



इनिशिएटिव(जीटीआरआई) के विश्लेषण के अनुसार इस साल जनवरी से लेकर जून तक वस्तुओं व सेवाओं का निर्यात 1.5 प्रतिशत

बढ़कर 385.4 अरब डॉलर हो गया, जबकि जनवरी-जून 2022 में यह 379.5 अरब डॉलर था। हालांकि, समीक्षाधीन इन छह महीनों में आयात 5.9 प्रतिशत घटकर 415.5 अरब डॉलर हो गया, जबकि जनवरी-जून 2022 में यह 441.7 अरब डॉलर था। 2023 के लिए विश्व व्यापार यूकेन में चल रहे युद्ध, उच्च मुद्रास्फीति, सख्त मौद्रिक नीति और वित्तीय अनिश्चितता सहित कई कारकों के कारण कमजोर है।

अयोध्या में बनेगा मोम का म्यूजियम

दुनिया में मशहूर मैडम तुसाद के म्यूजियम की तर्ज पर अयोध्या में भी रामायण की थीम पर विशाल वैक्स (मोम) म्यूजियम बनाया जाएगा। राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण के साथ अयोध्या का आकर्षण बढ़ाने के लिए योगी सरकार नई-नई परियोजनाएं ला रही हैं। हाल ही में रामकथा आधारित डिजिटल गैलरी के उद्घाटन के बाद अब विश्व स्तरीय वैक्स म्यूजियम बनाने की तैयारी की जा रही है।

अयोध्या में बनने वाले इस मोम म्यूजियम में न केवल इस नगर का इतिहास प्रदर्शित किया जाएगा बल्कि देश के प्राचीन वैभव और रामायण काल के पात्रों के पुतले भी लगाए जाएंगे। इस म्यूजियम में त्रिआयामी (श्री डायमेंशनल) प्रभाव पैदा करने वाली मूर्तियां व चित्र लगाए जाएंगे। इस



वैक्स म्यूजियम को बनाने की रूपरेखा अयोध्या नगर निगम ने तैयार की है। म्यूजियम को बनाने के लिए देशी-विदेशी फर्मों से प्रस्ताव मांगे गए हैं। चयनित होने वाली फर्म से नगर निगम 20 सालों के लिए करार करेगा। इस म्यूजियम के लिए अयोध्या नगर निगम ने

शहर में अफीम कोठी के पीछे की जगह चिन्हित की है। करीब 10,000 वर्ग क्षेत्रफल में प्रस्तावित इस म्यूजियम में पर्यटकों के आकर्षण के लिए कई चीजें बनाई जाएंगी। निगम अधिकारियों के मुताबिक प्रस्तावित वैक्स म्यूजियम में रामायणकालीन इतिहास की जानकारी के साथ ही पर्यटकों को देश के सांस्कृतिक व आध्यात्मिक इतिहास की भी जानकारी मिलेगी। यहां देश को सशक्त बनाने वाले महापुरुषों की मोम की मूर्तियां भी लगाई जाएंगी। अधिकारियों का कहना है कि योजना के मुताबिक म्यूजियम में पर्यटक अधिक देर तक रुके इसके इंतजाम किए जाएंगे। वैक्स म्यूजियम अयोध्या में तेजी से बन रहे राम मंदिर के करीब ही होगा जिसके चलते पर्यटकों के लिए वहां पहुंचना आसान होगा।

28% GST: MPL करेगा 350 कर्मचारियों की छंटनी

नए कराधान नियम से MPL पर कर का बोझ 350-400 प्रतिशत तक बढ़ गया है।

भा

रत का लोकप्रिय ऑनलाइन गेमिंग और फैंटसी स्पोर्ट्स स्टार्टअप मोबाइल प्रीमियर लीग (MPL) 350 कर्मचारियों की छंटनी कर रहा है, जो उसके भारतीय वर्कफोर्स का लगभग 50 प्रतिशत है। इस खबर को मनीकंट्रोल ने रिपोर्ट किया।

गौरतलब है कि कुछ हफ्तों पहले ही भारत सरकार ने ऑनलाइन रियल मनी गेम्स पर 28 फीसदी टैक्स की घोषणा की थी। अब उसका ही असर टट्ट की वर्कफोर्स पर पड़ा है।

क्या है MPL का आगे का प्लान?

मामले से परिचित लोगों ने कहा कि बेंगलुरु स्थित स्टार्टअप टट्ट ने पिछले हफ्ते ही कर्मचारियों की छंटनी करने की घोषणा की थी और मंगलवार को कागजी तौर पर सबको इसके बारे में सूचित कर दिया। MPL ने पहले कॉमेंट करने से इनकार कर दिया था। हालांकि, स्टोरी के प्रकाशन के बाद छंटनी की पुष्टि कर दी।

टट्ट के फाउंडर और उएड साई श्रीनिवास ने कहा, एक डिजिटल कंपनी के रूप में, हमारे वैरिएबल खर्च में मुख्य रूप से कर्मचारी, सर्वर और ऑफिस स्पेस शामिल होते हैं। इसलिए, हमें कंपनी को जिंदा रखने के लिए इन खर्चों को कम करने के लिए कदम उठाने चाहिए ताकि बिजनेस बरकरार



रह सके। मंगलवार को एक ईमेल में कर्मचारियों को लिखा। बेंगलुरु स्थित स्टार्टअप टट्ट में लगभग एक साल में यह छंटनी का दूसरा दौर है। उन्होंने मई 2022 में 100 से ज्यादा लोगों की छंटनी की थी और इंडोनेशियाई बाजार से एक्जिट हो गया था।

ऑनलाइन गेमिंग के लिए नए कर नियम

यह कदम भारत सरकार द्वारा ऑनलाइन गेमिंग उद्योग के लिए एक नए कराधान नियम के बाद उठाया गया है। भारत की वस्तु एवं सेवा कर परिषद, जिसमें टॉप फेडरल और देश वित्त मंत्री शामिल हैं, उन्होंने ऑनलाइन गेमिंग, कैसीनो और घुड़दौड़ पर 28 प्रतिशत अप्रत्यक्ष कर लगाने की योजना की घोषणा की है।

श्रीनिवास ने मंगलवार को ईमेल में लिखा, नए कराधान नियम से टट्ट पर कर का बोझ 350-400 प्रतिशत तक बढ़ गया है।

मोबाइल प्रीमियर लीग, गेम्सक्राफ्ट, पेटीएम फस्ट गेम्स, जूपी, नाजारा और रश सहित खिलाड़ियों का प्रतिनिधित्व करने वाले अखिल भारतीय गेमिंग फेडरेशन ने नए कराधान नियम को ह्रासवैधानिक, तर्कहीन और घृणित करार दिया।

टाइगर ग्लोबल, डीएसटी ग्लोबल, पीक एक्सवी, स्टीडव्यू कैपिटल और कोटक प्राइवेट इक्विटी सहित कई उल्लेखनीय निवेशकों ने बाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे कठिन कर व्यवस्था पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया गया।

निवेशकों के समूह ने कहा कि इस फैसले से 2.5 अरब डॉलर का नुकसान होगा और 1 मिलियन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियों का नुकसान होगा। हालांकि, भारत सरकार ने अपना निर्णय वापस नहीं लिया।



चंद्रयान-3 मिशन की सफलता से प्राइवेट सेक्टर,

ISRO भी दे रहा रफ्तार

चंद्रयान-3 मिशन की सफलता से भारत में अंतरिक्ष क्षेत्र की स्टार्टअप कंपनियों को बढ़ावा मिल सकता है। 2020 में महज 21 कंपनियां अंतरिक्ष क्षेत्र में काम कर रही थीं मगर अब इनकी संख्या बढ़कर 146 हो चुकी है। उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार इन्हें बढ़ावा देने के लिए सरकार इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का दायरा बढ़ाने की योजना बना रही है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) भी निजी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को रफ्तार दे रहा है। चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण से कुछ दिन पहले कर्पण की वाणिज्यिक शाखा इन-स्पेस (भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्द्धन एवं प्राधिकरण केंद्र) ने अपनी लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (SSLV) तकनीक निजी क्षेत्र को सौंपने के लिए अभिरुचि पत्र (EoI) मांगे थे। कोई प्रक्षेपण यान तकनीक निजी क्षेत्र के साथ साझा करने का यह पहला मौका है। इसरो ने 1980 के दशक से अब तक करीब 235 उद्योगों को 400 से अधिक प्रौद्योगिकी दी हैं। सूत्रों का कहना है कि ऐसी करीब 200 तकनीक पिछले कुछ साल में ही दी गई हैं।

इसरो और प्राइवेट सेक्टर के बीच पुल का काम करने वाली इन-स्पेस के चेयरमैन पवन गोयनका ने कहा, हम निजी क्षेत्र को प्रौद्योगिकी देने का काम बहुत तेजी से कर रहे हैं। इन-स्पेस इस काम में समन्वय का काम कर रही है। कुछ दिन पहले रखरख की प्रौद्योगिकी देने की भी घोषणा की है। हम ऐसी नौ या दस प्रमुख तकनीक पर विचार कर रहे हैं। इसका मकसद निजी क्षेत्र को सहारा देना है।

गोयनका ने कहा कि हाल में अंतरिक्ष नीति की घोषणा होने से इस काम को काफी बढ़ावा मिलेगा। सरकार इस क्षेत्र के लिए नीति तैयार कर रही है, जिससे स्टार्टअप को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा। योजना के अनुसार सब-सिस्टम विनिर्माण, प्रक्षेपण यान परिचालन और उपग्रह संचालन एवं स्थापना जैसे क्षेत्रों में एफडीआई



गोयनका ने कहा, इसरो के लिए इस पहल का मकसद कमाई करना नहीं है। हम निजी क्षेत्र के ज्यादा से ज्यादा हिस्से को अंतरिक्ष क्षेत्र से जोड़ना चाहते हैं। उनके लिए इसकी शुरुआत बहुत महंगी होगी। मगर इसरो के इस कार्यक्रम से से उनका काम आसान हो जाएगा।

की अनुमति होगी।

चंद्रयान-3 मिशन से भी अंतरिक्ष में निजी क्षेत्र की बढ़ती रुचि का पता चलता है। LVM-3 रॉकेट का करीब 85 फीसदी हिस्सा निजी क्षेत्र से आया था। इसकी कई महत्वपूर्ण प्रणालियां जीओसीओ (सरकारी स्वामित्व एवं कंपनियों द्वारा संचालित) मॉडल के तहत बनाई गई थीं।

उद्योग का अनुमान है कि अंतरिक्ष क्षेत्र में 146 स्टार्टअप के अलावा 1,500 से अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (MSME) काम करते हैं। इस क्षेत्र को जून 2020 में निजी क्षेत्र के लिए खोला गया था। तब से इस क्षेत्र में करीब 17.5 करोड़ डॉलर का निवेश हुआ है। अभी तक यहां कुल 25.8 करोड़ डॉलर का निवेश आया है। जिन कंपनियों को विदेशी निवेश मिला है, उनमें अग्निकुल, स्काईरूट, ध्रुव और पिक्सेल शामिल हैं। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से इसमें और तेजी आने की उम्मीद है।

गोयनका ने कहा, इसरो के लिए इस पहल का मकसद कमाई करना नहीं है। हम निजी क्षेत्र के ज्यादा से ज्यादा हिस्से को अंतरिक्ष क्षेत्र से जोड़ना चाहते हैं। उनके लिए इसकी शुरुआत बहुत महंगी होगी। मगर इसरो के इस कार्यक्रम से से उनका काम आसान हो जाएगा।

इसरो के क्षमता निर्माण कार्यक्रम कार्यालय के निदेशक एन सुधीर कुमार ने कहा, कर्पण ने काफी तकनीक विकसित की हैं, जो अंतरिक्ष ही नहीं तमाम दूसरे उद्योगों के लिए भी उपयोगी हैं। किसी वैज्ञानिक संगठन के लिए तकनीकी हस्तांतरण सामान्य बात है।

शोध संगठन जीटीआरआई ने अपनी एक रिपोर्ट में यह बात कही

भारत का निर्यात क्षमता से कम

भारत को वर्ष 2030 तक निर्यात में 1,000 अरब डॉलर का लक्ष्य हासिल करने के लिए अमेरिका, चीन और जापान जैसे विभिन्न देशों में घरेलू निर्यातकों को पेश होने वाली गैर-व्यापार बाधाएं (एनटीबी) दूर करने की दिशा में तेजी से काम करने की जरूरत है।



ग्ल

ोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिवह (ऋष्ठफक्र) ने निर्यात पर गैर-व्यापार बाधाओं का असर कम करने के लिए दोतरफा रणनीति का सुझाव भी दिया। भारत को वर्ष 2030 तक निर्यात में 1,000 अरब डॉलर का लक्ष्य हासिल करने के लिए अमेरिका, चीन और जापान जैसे विभिन्न देशों में घरेलू निर्यातकों को पेश होने वाली गैर-व्यापार बाधाएं (एनटीबी) दूर करने की दिशा में तेजी से काम करने की जरूरत है।

शोध संगठन जीटीआरआई ने अपनी एक

रिपोर्ट में यह बात कही। ह्यग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिवह (ऋष्ठफक्र) ने निर्यात पर गैर-व्यापार बाधाओं का असर कम करने के लिए दोतरफा रणनीति का सुझाव भी दिया।

जीटीआरआई के सह-संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, ह्यह्यपूर्व-पंजीकरण जरूरतों को पूरा करने में समय लगने और कई देशों में अनुचित घरेलू मानकों/नियमों की मौजूदगी से भारत के कई निर्यात प्रभावित होते हैं। भारत को इनके उचित समाधान के लिए भागीदार देशों से बात करनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत के कई खाद्य व कृषि उत्पादों को उच्च कीटनाशक स्तर, कीटों की उपस्थिति और मुंहपका-खुरपका रोग के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

श्रीवास्तव ने कहा, ह्यह्यभारत को हर मुद्दे को उठाना चाहिए और उसे कम से कम समय में हल करना चाहिए।

उन्होंने कहा, ह्यह्यभारत का निर्यात क्षमता से काफी कम है क्योंकि उन्हें यूरोपीय संघ, अमेरिका, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और कई अन्य देशों में एनटीबी का सामना करना पड़ रहा है।



वैश्विक आर्थिक वृद्धि के धीमा बने रहने की संभावना बढ़ सकता है नीतिगत जोखिम

भा

रतीय रिजर्व बैंक की छह सदस्यीय मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) इस सप्ताह मौद्रिक नीति की समीक्षा करेगी। यह समीक्षा तब की जा रही है जब अनुमान है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति की दर जुलाई में तय दायरे के ऊपरी स्तर को पार कर चुकी है। जून में यह दर 4.8 फीसदी थी।

उपभोक्ता कीमतों में यह इजाफा खाद्य कीमतों की बढ़ोतरी और खासतौर पर सब्जियों की कीमतों में इजाफे के चलते हुआ है। मौसमी वजहों के हल होते ही जहां सब्जियों की कीमतों में कमी आने की उम्मीद है, वहीं देश के बड़े हिस्सों में असमान वर्ष और देर से बोआई के कारण खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित हो सकता है। सरकार खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है।

हालांकि सरकार ने निर्यात पर प्रतिबंध और स्टॉक लिमिट जैसे जो कदम उठाए हैं, वे भले ही अल्पावधि में कीमतों को नियंत्रित करने में मदद करें लेकिन वे दीर्घकाल में भारत की खाद्य अर्थव्यवस्था के हित में नहीं हैं। हालांकि अल्पावधि भारत के लिए मुद्रास्फीति की स्थिति बिगड़ी है।

यह संभव है कि मौद्रिक नीति समिति चालू वित्त वर्ष के लिए अपने मुद्रास्फीति संबंधी पूर्वानुमान को 5.1 फीसदी से संशोधित करे। वित्तीय बाजार इस संशोधन पर बारीक नजर रखेंगे क्योंकि यह दरों से संबंधित निर्णय को सीधे प्रभावित करेगा। चाहे जो भी हो, आज जो हालात हैं उनके मुताबिक मौद्रिक नीति समिति के लिए बेहतर यही होगा कि वह हेडलाइन दरों में इजाफे पर नजर रखे जो प्राथमिक तौर पर खाद्य कीमतों से संचालित है।

हालांकि उसे मॉनसून की प्रगति पर भी सावधानी से नजर रखनी होगी और खाद्य मुद्रास्फीति के संभावित टिकारूपन पर भी। अगर मॉनसून अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं करता है तो मौद्रिक नीति समिति को पेशकदमी के लिए



तैयार रहना होगा। खाद्य मुद्रास्फीति के हमेशा सामान्यीकृत होने की संभावना रहती है।

केन्द्रीय बैंक को इस जोखिम को संभालना होगा। बहरहाल, चूंकि कोर मुद्रास्फीति में कमी आई है और उसके हेडलाइन दर से कम बने रहने की उम्मीद है इसलिए मौद्रिक नीति समिति के पास भी जरूरत पड़ने पर दर संबंधी कदम टालने की गुंजाइश रहेगी।

वैश्विक अनिश्चितता के कारण भी सतर्क

.....

यह संभव है कि मौद्रिक नीति समिति चालू वित्त वर्ष के लिए अपने मुद्रास्फीति संबंधी पूर्वानुमान को 5.1 फीसदी से संशोधित करे

रहने की आवश्यकता है। हालांकि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति संबंधी हालात में सुधार हुआ है लेकिन दरें अभी भी तय लक्ष्य से ऊपर हैं। उदाहरण के लिए अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने थोड़ा ठहरने के बाद जुलाई में नीतिगत ब्याज दरों में 25 आधार अंकों का इजाफा किया और भविष्य में उसके और सख्ती अपनाने की संभावना है।

यूरोपियन केन्द्रीय बैंक ने भी जुलाई में नीतिगत

दरें बढ़ाईं। विकसित देशों में समेकित दर वृद्धि और वित्तीय हालात में सख्ती का असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ेगा। यह बात वैश्विक मांग और जिंस कीमतों को प्रभावित करेगी।

बहरहाल, आर्थिक गतिविधियों में मजबूती खासतौर पर अमेरिका में मजबूती ने विश्लेषकों को हैरान किया है। कुछ अर्थशास्त्री अब उम्मीद कर रहे हैं कि अमेरिका इस वर्ष के अंत में हल्की मंदी की चपेट में आ जाएगा।

इस बीच चीन में आर्थिक सुधार की प्रक्रिया ध्वस्त होती दिख रही है। इस बात ने चीन के केन्द्रीय बैंक को मौद्रिक नीति को शिथिल करने पर विवश किया। चीन में अनुमान से धीमी वृद्धि वैश्विक जिंस कीमतों पर भी दबाव बनाएगी।

चूंकि वैश्विक आर्थिक वृद्धि के धीमा बने रहने की संभावना है इसलिए अतिरिक्त सख्ती भारत की संभावनाओं को प्रभावित कर सकती है। चूंकि मौद्रिक नीति समिति ने चालू चक्र में पहले ही नीतिगत रीपो दर में 250 आधार अंकों का इजाफा कर दिया है और वह अभी भी व्यवस्था में नजर आ रही है तो ऐसे में समझदारी यही है कि अभी रुककर प्रतीक्षा की जाए।

केन्द्रीय बैंक से होने वाला संचार अहम होगा। उसे इस बात को साफ तौर पर रेखांकित करना होगा कि मौद्रिक नीति समिति मुद्रास्फीति के चार फीसदी के लक्ष्य को लेकर प्रतिबद्ध है और वह अगर उसे लगा कि खाद्य मुद्रास्फीति का असर खपत के अन्य क्षेत्रों पर पड़ रहा है तो वह कदम उठाने से नहीं चूकेगी।

G20 के बाद अब P20 के आयोजन में जुटा भारत



भारत अब पार्लियामेंट-20 का आयोजन करने जा रहा है। जी20 सम्मेलन में सर्वसम्मति से जारी घोषणापत्र को लेकर पूरी दुनिया में जमकर भारत की प्रशंसा की गई थी। P20 सम्मेलन में शामिल सभी विषयों को लेकर भी एक घोषणापत्र जारी होगा। इस संयुक्त बयान में लोकतांत्रिक पद्धति से वैश्विक चुनौतियों का सामना करने का एक रोडमैप दिखाई देगा।

जी20 की शानदार सफलता के बाद अब दिल्ली में P20 यानी पार्लियामेंट-20 की तैयारी हो रही है। 12-14 अक्टूबर तक होने वाले इस सम्मेलन में जी20 समिट में भाग लेने वाले सभी देशों की संसद के अध्यक्ष और उनके साथ आए सांसदों के प्रतिनिधिमंडल शामिल होंगे। यह कार्यक्रम देश की नई संसद भवन में होगा। P-20 सम्मेलन के जरिए पूरी दुनिया भारत के लोकतंत्र के नए मंदिर से भी रूबरू होगी। वन अर्थ, वन फैमिली एवं वन फ्यूचर के लक्ष्यों के साथ ढ20 सम्मेलन के दौरान भारत अपने सदियों पुराने लोकतांत्रिक इतिहास को दुनिया के सामने रखने वाला है।

P20 समिट का मुख्य कार्यक्रम 13-14 अक्टूबर है लेकिन सम्मेलन की शुरुआत 12 अक्टूबर से होगी। पहले दिन पार्लियामेंटरी फोरम ऑन लाइफ के थीम पर कई इवेंट होंगे। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ एवं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के नेतृत्व में इन कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। सम्मेलन में कुल चार सत्र रखे गए हैं। पहला सत्र “Agenda 2030 for SDGs: Showcasing

Achievements, Accelerating Progress” के नाम से है। यह संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों पर आधारित है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने पर होगी बात

इसमें कोरोना महामारी के बाद विश्व स्तर पर गरीबी और पिछड़ेपन की चुनौतियों का सामना करने के लिए बनाई गई नीतियों और उसके क्रियान्वयन की समीक्षा होगी। इस सत्र में भारत अपने विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को एक रोल मॉडल के तौर पर सभी देशों के सामने पेश करने वाला है। दूसरा सत्र “Sustainable Energy Transition: Gateways to a Green Future” के ऊपर है। यह वैकल्पिक उर्जा स्रोतों के जरिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने को लेकर है। इस सत्र के दौरान विकसित देशों को अपने उन वादों को पूरा करने पर जोर होगा, जिसके तहत बजट और टेक्नोलॉजी के जरिए विकासशील दे-

शों को मदद देने पर सहमति बनी थी।

महिलाओं के मुद्दे भी P20 के एजेंडा में शामिल

तीसरा सत्र “Mainstreaming Gender Equality: From Womens Empowerment to Women-Led Development” के नाम से है। इस सत्र के लिए सबसे अहम बात यह है कि नई संसद की शुरुआत में ही भारत ने महिला आरक्षण विधेयक को मंजूरी देकर विश्व के लिए एक आदर्श पेश कर दिया है। चौथा और अंतिम सत्र “Transformation in Peoples Lives through Public Digital Platforms” को लेकर है। जी20 सम्मेलन में सभी सदस्य देशों ने डिजिटल पेमेंट एवं डिजिटल टेक्नोलॉजी पर आधारित दूसरी सरकारी योजनाओं को लेकर भारत की जमकर तारीफ की थी। P20 सम्मेलन में इन नीतियों को बनाने। उसे लागू करने एवं उसकी निगरानी में संसद की भूमिका की विस्तार से चर्चा होगी।



वर्ष 2022-23 में उसने 2.23 करोड़ टन चावल निर्यात किया।

चावल पर प्रतिबंध का प्रभाव

भा रत पिछले कुछ समय में दुनिया का शीर्ष चावल निर्यातक रहा है और उसने वैश्विक व्यापार का करीब 40 फीसदी अनाज निर्यात किया। वर्ष 2022-23 में उसने 2.23 करोड़ टन चावल निर्यात किया।

सरकार ने बासमती तथा उसना चावल को छोड़कर हर प्रकार के चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का यह निर्णय राजनीतिक बाध्यताओं से प्रेरित है। ऐसा शायद इसलिए किया गया है ताकि कुछ अहम राज्यों के विधानसभा चुनावों और अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव के पहले घरेलू आपूर्ति और कीमतों का बचाव किया जा सके। परंतु इसका असर पूरी दुनिया में महसूस किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में चावल की कीमतें 11 वर्ष के उच्चतम स्तर पर हैं तथा उनमें और इजाफा होने लगा है। कुछ मामलों में तो जो माल रास्ते में है उसकी कीमत भी 50 से 100 डॉलर प्रति टन तक बढ़ गई है। भारत पिछले कुछ समय में दुनिया का शीर्ष चावल निर्यातक रहा है और उसने वैश्विक व्यापार का करीब 40 फीसदी अनाज निर्यात किया। वर्ष 2022-23 में उसने 2.23 करोड़ टन चावल निर्यात किया। उसके अचानक इस बाजार से बाहर हो जाने से वैश्विक आपूर्ति में करीब एक करोड़ टन की कमी आएगी। गैर खुशबूदार चावल के अन्य निर्यातकों में थाईलैंड और वियतनाम के पास इस कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त चावल का भंडार नहीं है। इसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न की अंतरराष्ट्रीय कीमतें जो पहले ही मौसम के कारण उपज से जुड़ी अनिश्चितताओं, रूस द्वारा यूक्रेन को काला सागर बंदरगाहों के जरिये अनाज निर्यात की इजाजत वापस लेने के कारण बढ़ी हुई थीं उनमें और तेजी आई है। इससे खाद्यान्न संकट से जूझ रहे देशों की चिंताएं बढ़ेंगी। खासतौर पर छोटे अफ्रीकी देशों की जो भारत से आने वाले अनाज पर निर्भर करते हैं।

आश्चर्य नहीं कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के एक

भारत ने चावल निर्यात किया बैन मचा हड़कंप, US के मॉल्स में लूट



वरिष्ठ अधिकारी ने भारत द्वारा निर्यात प्रतिबंध को लेकर आक्रामक रुख दिखाया और कहा कि इससे वैश्विक खाद्य कीमतों की अस्थिरता की स्थिति और बिगड़ सकती है। उन्होंने भारत से कहा है कि उसे यह प्रतिबंध हटा लेना चाहिए। देश में भी सरकार के कदम को समझदारी भरा नहीं माना जा रहा है।

.....

ऐसे में सरकार को यही सलाह होगी कि वह बाजार को ऐसे झटके देने वाले निर्णय न ले और यह सुनिश्चित करे कि घरेलू और बाहरी खाद्यान्न व्यापार नीतियों में स्थिरता बरकरार रहे।

.....

इसकी कई वजह हैं। एक बात तो यह कही जा रही है कि ऐसा करके भारत आकर्षक वैश्विक कीमतों से फायदा उठाने से चूक रहा है। इसके अलावा यह इस लिहाज से भी नुकसानदेह हो सकता है क्योंकि किसान धान की खेती का

रकबा बढ़ाने को लेकर हतोत्साहित होंगे और वे उपज बढ़ाने वाले साधनों का प्रयोग भी नहीं करेंगे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे खाद्यान्न के विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और विश्वसनीय व्यापारिक साझेदार की भारत की छवि को भी नुकसान पहुंचेगा।

इसमें दो राय नहीं है कि चावल की घरेलू कीमतों में साल भर में करीब 11.5 फीसदी का इजाफा हुआ है लेकिन इस इजाफे की एक वजह न्यूनतम समर्थन मूल्य में इजाफा भी है। निश्चित रूप से स्थानीय बाजारों में चावल की कोई कमी नहीं है। इसी प्रकार भारतीय खाद्य निगम के कुल अनाज भंडार में कमी आई है लेकिन चावल का भंडार अभी भी 4.1 करोड़ टन से अधिक है यानी 1.35 करोड़ टन की बफर स्टॉक सीमा से काफी अधिक। यह सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए सरकार की 3.6 से 3.8 करोड़ टन की आवश्यकता से काफी अधिक है।

यह आशंका भी कमजोर हुई है कि उभरते अल नीनो प्रभाव के कारण मॉनसून तथा धान की खेती प्रभावित होगी। अब तक तो मॉनसून देश भर में सामान्य से बेहतर रहा है और धान की बोआई उन इलाकों में भी काफी अच्छी है जहां पिछले साल यह इस समय कमजोर रही थी। ऐसे में सरकार को यही सलाह होगी कि वह बाजार को ऐसे झटके देने वाले निर्णय न ले और यह सुनिश्चित करे कि घरेलू और बाहरी खाद्यान्न व्यापार नीतियों में स्थिरता बरकरार रहे।



THE KATHA CONTINUES...

रजनी का कमाल और गदर 2 का धमाल

गदर-2 ने तीन दिन में 135 करोड़ रुपये, ओएमजी-2 ने 43.56 करोड़ रुपये और चिरंजीवी की फिल्म भोला शंकर ने 24 करोड़ रुपये कमाए।

● शाइन जेकब

ना

जेलर में रजनीकांत की अकड़, गदर-2 में सनी देओल की अजीम शख्सियत और दहाड़ तथा **OMG-2** में अक्षय कुमार के करिश्मे के दम पर भारतीय सिनेमा ने पिछले सप्ताहांत (11 से 13 अगस्त) में टिकट खिड़की पर कुल 390 करोड़ रुपये कमा डाले।

किसी एक हफ्ते में टिकट बिक्री से यह अब तक की सबसे अधिक कमाई है। इतना ही नहीं ये फिल्में और अपने पसंदीदा सितारे देखने के लिए दर्शकों का हुजूम सिनेमाघरों में उमड़ पड़ा। पिछले सप्ताह थिएटरों में 2.1 करोड़ से ज्यादा दर्शक पहुंचे, जो 10 साल का सबसे बड़ा आंकड़ा है।

टिकट खिड़की से हुई कमाई पिछले 100 साल में सिनेमा उद्योग की सबसे अधिक

प्रोड्यूसर्स गिल्ड ऑफ इंडिया और मल्टीप्लेक्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एमएआई) ने आज एक बयान जारी कर बताया कि इस सप्ताहांत यानी शुक्रवार से रविवार के बीच टिकट खिड़की से हुई कमाई पिछले 100 साल में सिनेमा उद्योग की सबसे अधिक कमाई रही है।

इन फिल्मों को देखने थिएटर पहुंचे 2.1 करोड़ दर्शकों ने भी रिकॉर्ड बना दिया क्योंकि पिछले दस साल में किसी भी सप्ताहांत में इतने दर्शक फिल्में देखने नहीं पहुंचे हैं। ट्रेड विश्लेषक मनोबाला विजयबालन ने कहा कि कमाई और दर्शकों की आमद के मामले में इससे पिछला रिकॉर्ड अप्रैल 2017 में बना था। उस समय बाहुबली 2: द कन्क्लूजन देसी बॉक्स ऑफिस पर धूम मचा रही थी।

इन फिल्मों ने यह डर भी दूर कर दिया कि हिंदी फिल्में देखने के लिए दर्शक सिनेमा हॉल नहीं पहुंच रहे हैं और फिल्म उद्योग का भविष्य अंधेरे में है। एमएआई के अध्यक्ष और पीवीआर सिनेमाज के मुख्य कार्याधिकारी कमल ज्ञानचंदानी ने

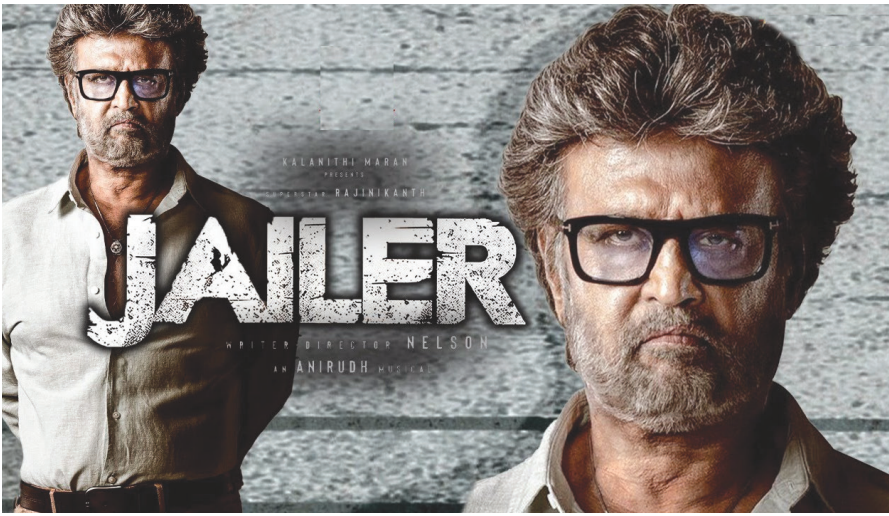
बिजनेस स्टैंडर्ड से कहा, ह्यकरीब एक साल की खामोशी के बाद गदर-2, ओएमजी-2 एवं रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के जरिये बॉलीवुड ने शानदार वापसी की है।

कमाई के मामले में जेलर फिलहाल सबसे आगे है, लेकिन हिंदीभाषी क्षेत्रों में अधिक थिएटर होने के कारण गदर-2 लंबे समय तक चल सकती है। इस हफ्ते पीवीआर आईनॉक्स के थिएटरों में 33.6 लाख दर्शक पहुंचे और टिकट बिक्री से 100 करोड़ रुपये से ज्यादा कमाई हुई।

देश में कुल 9,500 से 10,000 थिएटर

एमएआई द्वारा साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार देश में कुल 9,500 से 10,000 थिएटर हैं, जिनमें लगभग 60 फीसदी थिएटर हिंदीभाषी क्षेत्र में हैं। देश में करीब 4,000 मल्टीप्लेक्स स्क्रीन हैं। उद्योग आंकड़े बताते हैं कि जेलर ने रिलीज (गुरुवार को रिलीज) के पहले चार दिनों में ही दुनिया भर के बॉक्स ऑफिस पर 222 करोड़ रुपये कमा लिए।

गदर-2 ने तीन दिन में 135



करोड़ रुपये कमाए

गदर-2 ने तीन दिन में 135 करोड़ रुपये, ओएमजी-2 ने 43.56 करोड़ रुपये और चिरंजीवी की फिल्म भोला शंकर ने 24 करोड़ रुपये कमाए। सिनेमा ओनर्स ऐंड एग्जिबिटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष नितिन दातार ने कहा, हजेलर, गदर-2 और ओएमजी-2 की कमाई ने वाकई जोश बढ़ा दिया है। पिछले 10 साल में मल्टीप्लेक्स बढ़ने के साथ स्क्रीन की संख्या बहुत बढ़ी है। पिछले कुछ साल की तरह इस साल भी बॉक्स ऑफिस पर दक्षिण भारतीय फिल्मों का दबदबा रहने की उम्मीद है। दूसरी छमाही में कई नई फिल्मों रिलीज होने से उसे ताकत मिलेगी।

दक्षिण भारत से सुपरस्टार विजय की लियो, केजीएफ सीरीज के निर्देशक प्रशांत नील की प्रभास अभिनीत फिल्म सालार: पार्ट-1 झ सौजफायर और कमल हासन की फिल्म इंडियन-2 शामिल हैं। विजयबालन ने कहा, ह्यकोविड-19 के बाद से ही सिनेमा हॉल खाली थे और कारोबारी चिंतित थे कि महामारी के पहले जैसी दर्शकों की भीड़ कब लौटेगी। पूरे भारत में एक साथ अच्छी फिल्में क्या आईं, सिनेमा हॉल खचाखच भर गए। कोविड के बाद लोग बाहर निकलने से झिझक रहे थे और अच्छी फिल्में नहीं आने तथा टिकट महंगे होने की चिंता भी उनके मन में थी। जेलर, गदर-2 और ओएमजी-2 ने एक झटके में सब बदल दिया।

जब तक अच्छी फिल्में आती रहेंगी तब तक सिनेमा का भविष्य है उजला

उन्होंने कहा, हजब तक अच्छी फिल्में आती रहेंगी तब तक सिनेमा का भविष्य उजला है। सामग्री ही सबसे अहम होती है क्योंकि दर्शक मनोरंजन चाहते हैं। उनके आंकड़ों के हिसाब से सप्ताहांत में जेलर को देखने 1.07 करोड़ दर्शक पहुंचे। गदर-2 के दर्शकों की संख्या 76 लाख रही और ओएमजी-2 को 22 लाख लोगों ने देखा।

प्रोड्यूसर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के अध्यक्ष शिवाशिष सरकार ने कहा, ह्यथिएट्रों में दर्शकों की जैसी भीड़ जुटी है, उसे देखकर हमारे अंदर नई ऊर्जा और ताकत भर गई है। इतनी बड़ी तादाद में दर्शक लंबे अरसे से नहीं देखे गए थे। आलम यह है कि सुबह के शो के टिकट भी पूरी तरह बिक जा रहे हैं। मुख्यधारा की भारतीय फिल्मों के मुरीदों के लिए पिछले सप्ताहांत बहुत शानदार रहा। गोडसे के समर्थन में बयान अचानक नहीं आया है। आरएसएस वर्षों से शाखाओं में बच्चों को यही सब बातें सिखा रहा है, इसके असर में आए बच्चे, बड़े होने के बाद भी इस जहरीले प्रचार से मुक्त नहीं हो पाते।





'राजस्थान में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 13.48 करोड़ रुपए मंजूर'

गह लोत ने जैसलमेर स्थित ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थल श्री कालेडूंगर राय मंदिर परिसर में विकास कार्यों के लिए 1.50 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी है।

राजस्थान सरकार ने नागौर और जैसलमेर सहित कई जगह धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 13.48 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं जिनसे यात्री सुविधाएं विकसित की जाएंगी। एक प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि राज्य सरकार धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने तथा ऐसे स्थानों पर यात्रियों के लिए विभिन्न सुविधाएं विकसित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

इसी क्रम में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने नागौर, जैसलमेर तथा अलवर के धार्मिक स्थलों पर धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 13.48 करोड़ रुपए के वित्तीय प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। इसके तहत नागौर जिले में बुटाटी में 3.10 करोड़ रुपए, घाटवेश्वर महादेव मंदिर में 1.65 करोड़ रुपये, हरमल दास जी महाराज मंदिर में 1.61 करोड़ रुपये तथा दरगाह हजरत सम्मन बड़ी खाटू में 1.36 करोड़ रुपए

इसके तहत नागौर जिले में बुटाटी में 3.10 करोड़ रुपए, घाटवेश्वर महादेव मंदिर में 1.65 करोड़ रुपये, कुल 7.74 करोड़ रुपए के विभिन्न पर्यटन विकास कार्य कराए जाएंगे।



सहित कुल 7.74 करोड़ रुपए के विभिन्न पर्यटन विकास कार्य कराए जाएंगे।

गहलोत ने जैसलमेर स्थित ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थल श्री कालेडूंगर राय मंदिर परिसर में

विकास कार्यों के लिए 1.50 करोड़ रुपए की स्वीकृति दी है। उन्होंने अलवर जिले के बानसूर किला स्थित माताजी मंदिर तथा गंगा माता मंदिर, तालवृक्ष में विकास कार्य करवाने के लिए 4.24 करोड़ रुपए के वित्तीय

प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2023-24 के बजट में इस संबंध में घोषणा की गई थी।

आदतें आसानी से नहीं जातीं। आदतें बुरी हों, तो और भी मुश्किल आती है। कहा जाता है कि अगर उनसे छुटकारा पाना है तो बेहतर होगा कि उसका कोई अच्छा विकल्प खोजा जाए। इधर कुछ खोजबीन सेहत को नुकसान पहुंचाने वाली कई चीजों के विकल्पों की हुई है। इनमें से एक है ई-सिगरेट। कोई 50-55 साल पहले इन्हें नुकसान पहुंचाने वाली असली सिगरेट के सेहतमंद विकल्प के रूप में दुनिया में पेश किया गया था। दावा किया गया कि अगर इन्हें आजमाया जाए तो ये वास्तविक सिगरेट से होने वाले नुकसान से हमें बचा लेती हैं। लेकिन दशकों से प्रचलित इस धारणा को हाल में अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना विविद्यालय के शोध से करारा झटका लगा है। इस शोध के नतीजे में दावा किया गया है कि ई-सिगरेट से तकरीबन उतने ही खतरे होते हैं, जितने तंबाकू से बनी आम सिगरेट में होते हैं। बताया जा रहा है कि सिगरेट के धुएं में पाए जाने वाले जहरीले एलिडहाइड की तरह ही ई-सिगरेट में इस्तेमाल होने वाला केमिकल सिन्नामेलिडहाइड शरीर की कोशिकाओं को ऐसे नुकसान पहुंचाता है, जो लोगों में सांस से जटिल समस्याएं पैदा कर देता है। यह रसायन शरीर में सांस के जरिए आने वाली ऑक्सीजन की आवाजाही को बाधित करता है। यह अंततः फेफड़ों के महत्वपूर्ण एंटीबैक्टीरियल रक्षा तंत्र को नुकसान पहुंचाता है। दिलचस्प बात यह है कि हाल तक हमारे देश में भी ई-सिगरेट की यह कहकर वकालत की जाती रही है कि अगर कोई व्यक्ति धूम्रपान की लत छोड़ नहीं पा रहा हो, तो ई-सिगरेट उसका सुरक्षित विकल्प है। देश में कार्सिल फॉर हार्मफुल रिड्यूस्ड आल्टरनेटिव (सीएचआरए) और एसोसिएशन ऑफ वेपर्स इंडिया (एवीआई) जैसे संगठनों की मांग रही है कि सरकार ई-सिगरेट में इस्तेमाल होने वाली एक खास सामग्री इलेक्ट्रॉनिक निकोटीन आपूर्ति तंत्र (इंड्स) पर प्रतिबंध न लगाए क्योंकि इससे इसकी तस्करी बढ़ सकती है। यही नहीं, इससे स्मोकिंग करने वाले लाखों लोगों को सिगरेट का सुरक्षित विकल्प भी नहीं मिलेगा और उनकी सेहत फिर खतरे में पड़ जाएगी। ध्यान रखना होगा कि सिगरेट आम आदमी का शगल नहीं है।

यह वैसे भी गरीब की बीड़ी आदि से महंगी होती है व टैक्सों से और महंगा बनाया गया है ताकि इससे सेवन से लोग बाज आए। ई-सिगरेट इससे भी महंगा विकल्प है। कुछ साल पहले मुंबई धमाका केस में जेल में बंद अभिनेता संजय दत्त ने जेल में ई-सिगरेट पीने की इजाजत मांगी थी, तो देश में नये सिरे से इस पर बहस भी छिड़ी थी कि क्या ये वास्तव में सिगरेट का सुरक्षित विकल्प

सिगरेट जितना ही हानिकारक ई-सिगरेट



हैं। असल में, ई-सिगरेट बनावट में भले ही आम सिगरेट जैसी दिखे, पर यह उससे काफी अलग होती है। यह एक प्रकार की इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस है, जिसे इको पीवी यानी पर्सनल वेपोराइजर (संक्षेप में ई-सिगरेट) कहते हैं। यह एक तरह का इलेक्ट्रॉनिक इनहेलर होता है, जिसमें मौजूद तरल पदार्थ एक प्रक्रिया से भाव में बदला जाता है और उससे धुएं जैसा अहसास पीने वाले को होता है। मोटे तौर पर ई-सिगरेट के चार हिस्से होते हैं, कार्टिज, एटमाइजर, लिक्विड और बैटरी। कार्टिज यानी दोनों छोर से खुला सिगरेट का बाहरी हिस्सा, जिसके एक सिरे से तरल पदार्थ को एटमाइजर में प्रवाहित किया जाता है जो दूसरे सिरे पर स्मोकर के मुंह में जाता है। सिगरेट के बीचो-बीच लगे एटमाइजर में एक क्वॉइल होती है जो कार्टिज से आने वाले तरल पदार्थ को भाव में बदलती है। ये सिगरेट रिचार्जबल बैटरी से चलती

हैं। और इसमें जो लिक्विड होता है उसे ई-जूस भी कहा जाता है। अक्सर ये तरल पदार्थ निकोटीन के साथ सिन्नामेलिडहाइड, इको प्रोपलीन ग्लाइसोल या वेजिटेबल ग्लिसरीन के साथ मिश्रण से तैयार किए जाते हैं। कुल मिलाकर ई-सिगरेट भी एक कृत्रिम नशे का रासायनिक इंतजाम है, जिसके खतरों को लेकर अभी तस्वीर पूरी तरह साफ नहीं की जा सकती है। हालांकि अपने देश में केंद्र सरकार की तरफ से ई-सिगरेट पर रोक लगाने का कोई कानून नहीं है, फिर भी तकरीबन आधा दर्जन राज्यों कर्नाटक, केरल, मिजोरम, महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश और बिहार आदि ने ई-सिगरेट पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया हुआ है। ऐसी ही पाबंदी लगाने की मांग दिल्ली में भी उठी है। असल में, ई-सिगरेट का वाकया भी हमारे देश में जनस्वास्थ्य को लेकर दुलमुल रवैया दिखाता है।

दूध के नाम पर जहर पीता देश

आप जिस दूध का सेवन कर रहे हैं, क्या वह पीने योग्य है, संभवतः नहीं। दरअसल आप और आपके परिवार के शेष सदस्य ही नहीं, लगभग सारा देश ही दूषित दूध पीने को अभिशप्त है। सबसे दुःखद स्थिति यह है कि जहरीले दूध से मुक्ति का कोई तत्काल उपाय भी फिलहाल समझ में नहीं आ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने हाल ही में भारत सरकार को एक एडवाइजरी नोट भेजी है। इसमें सरकार से कहा गया है कि यदि भारत में दूषित दूध और उससे बनने वाले उत्पादों पर तत्काल रोक न लगायी गयी तो सन 2025 तक भारत की 87 फीसदी जनसंख्या कैंसर जैसे जानलेवा रोगों की गिरफ्त में होगी। यह देखा जाए तो एक अत्यंत गंभीर और भयावह चेतावनी है। इसे कतई नजरंदाज नहीं किया जाना चाहिए। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार, देश में फिलहाल 68 फीसदी खराब, दूषित और जहरीला दूध बिक रहा है। यह आंकड़ा सरकारी है। सरकार ने लोकसभा में 17 मार्च, सन 2015 को माना था कि देश में बिकने वाला 68 फीसदी दूध दूषित होता है। इस बीच, कुछ समय पहले केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने कहा था, विगत 3 वर्षों में दुग्ध उत्पादन 137.7 मिलियन टन से बढ़कर 165.4 मिलियन टन हो गया है। सन 2014 से सन 2017 के बीच वृद्धि 20% से भी अधिक रही है। देश में दूध का उत्पादन बढ़ना तो सुखद है पर अगर वह दूध शुद्ध नहीं होगा तो फिर उसका कोई लाभ नहीं, सिर्फ हानि है। अब आप ही बताएं कि एक आम नागरिक करे तो क्या करे? यानी देश के सामान्य शख्स के लिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना अब बड़ी चुनौती हो चुकी है। अभी तो आम आदमी दूध का गिलास पीकर सोचता है कि उसने कुछ पौष्टिक सामग्री ग्रहण कर ली। अब यह कहना तो रस्मी होगा कि मिलावटी दूध की बिक्री रोकने के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चले और दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई हो। अब तो सरकार को मिलावटखोरों पर कसकर चाबुक चलानी ही होगी ताकि ये जहर बेचना बंद करें। सरकार को दूध में मिलावट पर कराए एक सर्वे से पता चला है कि उत्तर भारत के राज्यों में स्थिति खराब हो चुकी है। इनमें मिलावटी दूध देश के बाकी राज्यों की तुलना में अधिक बिक रहा है। उत्तरी राज्यों का मतलब उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखंड वगैरह से है। जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में बताया गया है कि मिलावटी दूध या उससे बने उत्पादों का सेवन करने से कैंसर जैसे असाध्य रोग का खतरा बढ़ जाता है। यह जहरीला दूध आंख से लेकर आंत तक, दिल से लेकर प्रजनन क्षमता तक सब पर असर

डालता है। इसके अलावा इन्सान तमाम गंभीर बीमारियों की चपेट में आ सकता है। आप जिस दूध का सेवन कर रहे हैं, क्या वह पीने योग्य है, संभवतः नहीं। दरअसल आप और आपके परिवार के शेष सदस्य ही नहीं, लगभग सारा देश ही दूषित दूध पीने को अभिशप्त है। सबसे दुःखद स्थिति यह है कि जहरीले दूध से मुक्ति का कोई तत्काल उपाय भी फिलहाल समझ में नहीं आ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने हाल ही में भारत सरकार को एक एडवाइजरी नोट भेजी है। इसमें सरकार से कहा गया है कि यदि भारत में दूषित दूध और उससे बनने वाले उत्पादों पर तत्काल रोक न लगायी गयी तो सन 2025 तक भारत की 87 फीसदी जनसंख्या कैंसर जैसे जानलेवा रोगों की गिरफ्त में होगी। यह देखा जाए तो एक अत्यंत गंभीर और भयावह चेतावनी है। इसे कतई नजरंदाज नहीं किया जाना चाहिए। डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार, देश में फिलहाल 68 फीसदी खराब, दूषित और जहरीला दूध बिक रहा है। यह आंकड़ा सरकारी है। सरकार ने लोकसभा में 17 मार्च, सन 2015 को माना था कि देश में बिकने वाला 68 फीसदी दूध दूषित होता है। इस बीच, कुछ समय पहले केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने कहा था, विगत 3 वर्षों में दुग्ध उत्पादन 137.7 मिलियन टन से बढ़कर 165.4 मिलियन टन हो गया है। सन 2014 से सन 2017 के बीच वृद्धि 20% से भी अधिक रही है। देश में दूध का उत्पादन बढ़ना तो सुखद है पर अगर वह दूध शुद्ध नहीं होगा तो फिर उसका कोई लाभ नहीं, सिर्फ हानि है। अब आप ही बताएं कि एक आम नागरिक करे तो क्या करे? यानी देश के सामान्य शख्स के लिए अपने शरीर को स्वस्थ रखना अब बड़ी चुनौती हो चुकी है। अभी तो आम आदमी दूध का गिलास पीकर सोचता है कि उसने कुछ पौष्टिक सामग्री ग्रहण कर ली। अब यह कहना तो रस्मी होगा कि मिलावटी दूध की बिक्री रोकने के लिए व्यापक स्तर पर

अभियान चले और दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई हो। अब तो सरकार को मिलावटखोरों पर कसकर चाबुक चलानी ही होगी ताकि ये जहर बेचना बंद करें। सरकार को दूध में मिलावट पर कराए एक सर्वे से पता चला है कि उत्तर भारत के राज्यों में स्थिति खराब हो चुकी है। इनमें मिलावटी दूध देश के बाकी राज्यों की तुलना में अधिक बिक रहा है। उत्तरी राज्यों का मतलब उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखंड वगैरह से है। जैसा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में बताया गया है कि मिलावटी दूध या उससे बने उत्पादों का सेवन करने से कैंसर जैसे असाध्य रोग का खतरा बढ़ जाता है। यह जहरीला दूध आंख से लेकर आंत तक, दिल से लेकर प्रजनन क्षमता तक सब पर असर डालता है। इसके अलावा इन्सान तमाम गंभीर बीमारियों की चपेट में आ सकता है।

फिर कैसे रुके दूध में मिलावट का धंधा? उपभोक्ता मामलों के जानने वाले जानते हैं कि लगभग सभी राज्यों में खाद्य सुरक्षा विभाग बेहद कम स्टाफ के साथ काम कर रहे हैं। इनमें ज्यादा से ज्यादा 40-50 इंस्पेक्टर ही तैनात होते हैं। जरा सोचिए कि हमारे देश के लंबे-चौड़े राज्यों में इतने कम इंस्पेक्टरों से काम कैसे चलता होगा? सभी शहरों में दूध और दूध से जुड़े उत्पादों की बिक्री सैकड़ों-हजारों डेयरियों और अन्य स्टोर्स से हो रही है। क्या 40-50 इंस्पेक्टरों से आप दूध में मिलावट के काम के गोरखधंधे को रोक सकते हैं? कतई नहीं। आखिरकार, इन इंस्पेक्टरों को खाद्य पदार्थ, सब्जी, फल, तेल, घी, होटल, रेस्टोरेंट, चिकेन, मटन की दुकानें आदि भी तो देखनी होती हैं इसलिए इस मिलावट के कारोबार पर तगड़ा हल्ला बोलने के लिए ईमानदार और दीर्घकालीन योजना बनाने की जरूरत है। उच्चतम न्यायालय ने दूध में मिलावट को रोकने के लिए सन 2015 में एक अहम फैसला सुनाया था। उसने माना था कि देश में मिलावटी दूध बिक रहा है और ऐसे में आवश्यक है कि कानून में

कड़े प्रावधान किये जाएं। तब सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों के बेंच ने मिलावट को गंभीर मुद्दा बताते हुए निर्देश दिए थे कि केंद्र और राज्य सरकारें ह्याफूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट- 2006 को सख्ती से लागू करने के लिए असरदार कदम उठाएं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का किस हद तक पालन हुआ है, यह मालूम नहीं है। अगर नहीं हुआ है तो क्यों नहीं हुआ? कौन जवाब देगा इसका?

यह समझना भी आवश्यक होगा कि दूध उत्पादन को बढ़ाने का लाभ ही क्या है, अगर हम मिलावटी दूध के कारोबार पर रोक न लगा सकें। इस डेयरी व्यवसाय से कई करोड़ किसान अपना परिवार चलाते हैं। एक बात यह भी समझ आ रही है कि दूध के क्षेत्र में प्रोसेसिंग संयंत्रों की



कमी है। दूध को सही-सुरक्षित रखने के लिये ठंडा तापमान एवं सही हाईजेनिक ढंग से प्रोसेसिंग आवश्यक होता है। गांवों में छोटे-छोटे प्रोसेसिंग प्लांट लगने चाहिए और कलेक्शन सेंटर होने चाहिए, जिससे किसानों को भी दूध के अच्छे दाम मिल सकें और दूध को जहरीला होने से बचाया जा सके। अब तो त्योहारों के दिन शुरू हो चुके हैं। इस समय मिलावटी दूध की सप्लाई खुलेआम और धड़ल्ले से होती है। यानी सफेद जहर बेचकर कुछ लोग पैसा कमाने से पीछे नहीं

हटते, जबकि मिलावटी दूध से निर्मित मिठाइयां किसी को भी अस्पताल पहुंचा सकती हैं। कौन सा भारतीय है जिसे सुस्वादु मिष्ठान नापसंद है? पर त्योहारों पर अधिकतर मिठाइयां मिलावटी ही मिलती हैं। मिलावटी मावे और दूध में सबसे ज्यादा खतरनाक कास्टिक सोडा और यूरिया की बड़ी मात्रा में मिलावट होती है। इस तरह के मावे या दूध से बनीं मिठाइयों के सेवन से शुरूआती तौर पर पेशिया हो सकती है। बेशक, अगर मिठाई अत्यधिक मिलावटी है तो उसमें कास्टिक सोडा और यूरिया की मात्रा भी ज्यादा होती है। इससे गुर्दे से रक्तस्राव होने का खतरा बढ़ जाता है। यानी त्योहारी मौसम में मिठाई खाना संकट को खुला आमंत्रण देना है। यह तो हुई 68% मिलावटी दूध की बात। अब जरा, बाकी के 32% की भी बात कर लें। इनमें भी अधिकांश दूध जर्सी, होलिस्टियन, फ्रीजियन आदि दोगली किस्म की गायों के होते हैं, जो वास्तव में गाय हैं ही नहीं। वे तो जंगली सुअर और नीलगाय को क्रॉस कर बने ऐसे जानवर हैं, जिन्हें गोरी चमड़ी वाले उनके मांस को अपने भोजन के लिए इस्तेमाल करते हैं। अब इनके ऊपर शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं कि इन गायों (या पशुओं का) के दूध जिसे ए-1 की संज्ञा दी जाती है, इनमें बीटा मारफीन नाम का जहर है, जो डाइबिटीज, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, मानसिक रोग और गर्भस्थ शिशुओं में होने वाली मानसिक या शारीरिक विकलांगता, जिसे ऑटिज्म कहा जाता है, जैसी पांच बड़ी बीमारियों का मुख्य कारण हैं। अब इसके बाद बचा क्या बताएं। आधुनिकतम रिसर्च यह है कि विश्व भर में भारत, पाकिस्तान, बर्मा, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश में पायी जाने वाली देसी गाय का दूध ही जिसे ए-2 नस्ल की गाय की संज्ञा अंग्रेजों ने दे रखी है, मां के दूध के समान है। ए-2 नस्ल की गाय की सामान्य पहचान कंधे पर उभार या पुट्टा और गले के नीचे का झालर है। दुर्भाग्यवश ऐसी अधिकांश गायें अब तो हमने ज्यादातर ब्राजील, कनाडा, अमेरिका, स्विट्जरलैंड, स्वीडेन, डेनमार्क, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड निर्यात कर दिया और विदेशों से ज्यादा दूध के नाम पर दोगली गायों को ले आये, जिनके दूध में बीटा मारफीन होता है। यानी, अब विदेशी हमारी गौ माता का दूध पी रहे हैं और हम जहर पीने को मजबूर हैं। यहां यह बता दें कि भैसों का दूध भी ए-2 होता है। यानी वह पानी मिलाकर पतला करके पीने लायक तो है, लेकिन, सुपाच्य नहीं है। क्योंकि, ए-2 यानी देसी गायों के दूध का मेल्टिंग तापमान 37 डिग्री सेल्सियस होता है, जबकि, मनुष्य के शरीर का तापमान 37.2 डिग्री सेल्सियस होता है, जिससे ए-2 गाय का दूध आमाशय में जाते ही पच जाता है,



मशरूम उत्पादन में नई उड़ान



दस सदस्यीय समूह का गठन वर्ष 2016-17 में कृषि विस्तार सुधार कार्यक्रम 'आत्मा' के तहत किया गया। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण पहले लिया। इसके बाद वर्ष 2013-14 में रायपुर स्थित कृषि मेला और नागपुर में आयोजित कृषि बसंत में भ्रमण पर गए।

आज उनका समूह 200 रूपए प्रति किलो के दाम पर मशरूम की विभिन्न प्रजातियां जैसे- आयस्टर फ्लोरिडा, आयस्टर सज्जर काजू, आयस्टर इओस, व्हाईट मिल्की इत्यादि का उत्पादन कर बेच रहा है। निर्मलकर बताते हैं कि उनके दस सदस्यीय समूह का गठन वर्ष 2016-17 में कृषि विस्तार सुधार कार्यक्रम 'आत्मा' के तहत किया गया। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण पहले लिया। इसके बाद वर्ष 2013-14 में रायपुर स्थित कृषि मेला और नागपुर में आयोजित कृषि बसंत में भ्रमण पर गए। यहाँ उन्हें मशरूम उत्पादन की बारीकियाँ, मार्केटिंग स्किल इत्यादि के बारे में सीखने को मिला।

उन्हें जब यकीन हो गया, कि मशरूम उत्पादन की अच्छी संभावनाएं हैं, तब समूह गठित कर गांव में ही 8.10 के कमरे में मशरूम उत्पादन शुरू किया। फिर समूह ने वर्ष 2017 में राष्ट्रीय राजमार्ग 43 में 1200 वर्गफीट का हॉल लीज

पर लिया। आज आलम यह है कि हर दिन औसतन 60 किलो मशरूम यहाँ उत्पादन हो रहा है।

प्रारम्भिक समय में मुफ्त मशरूम बांट उसके फायदे गिनाने पड़ते थे, लेकिन आज हालात बदल गए हैं, वही लोग अब मशरूम खरीद कर बड़े चाव से खा रहे हैं। यह कहना है पुरी के निर्मल मशरूम उत्पादक कृषक अभिरूचि समूह के 35 वर्षीय अध्यक्ष योगेश निर्मलकर का।

निःशक्तता कभी बाधा नहीं बनी

पोलियो की वजह से दिव्यांग योगेश बताते हैं कि निःशक्तता कभी उनके कार्य में बाधा नहीं बनी। आज उनका समूह ना केवल स्थानीय स्तर पर मशरूम बेच रहा है, बल्कि धमतरी के चौक-चैराहों, रत्नाबाधा, मुजगहन, रूद्री रोड, कालोनियों में घूम-घूमकर अपने उत्पाद का विक्रय कर रहा है। पुरी स्थित उत्पादन केन्द्र के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग 43 पर भी इस समूह का एक स्टॉल लगा है, जहाँ से राहगीर हाथों-हाथ

मशरूम खरीदकर ले जाते हैं। बिक्री के बाद बचे हुए मशरूम का प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन कर अचार, बड़ी, पापड़ बनाकर अग्रिम बुकिंग करने वाले उपभोक्ताओं को समूह द्वारा बेचा जाता है।

केचुवा खाद बनाने की योजना

योगेश बताते हैं कि समूह ना केवल मशरूम उत्पादन को और बढ़ाना चाहता है, बल्कि भविष्य में मशरूम उत्पादन के अपशिष्ट पदार्थ से उच्च गुणवत्ता का केचुवा खाद बनाने की भी योजना है। उन्होंने बताया कि बिक्री से होने वाली आय से समूह वर्मी टांका बनाएगा, जहाँ पूरी तरह से जैविक वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन होगा। वे चहक कर बताते हैं कि हाल ही में वरिष्ठ जैव कृषि वैज्ञानिक डॉ. अशोक मिश्रा ने समूह के उत्पादन स्थल का मुआयना किया तथा मशरूम सुखाने के लिए नायलोन की जाली का इस्तेमाल करने के अनूठे तरीके को काफी सराहा भी।



क्या जानते हैं आप? रोज पढ़ने से होते हैं ये 10 बड़े फायदे

अ कसर लोग या तो शौक से या किसी मकसद से कोई पुस्तक पढ़ते हैं लेकिन उनको यह पता नहीं होता है कि वास्तव में पढ़ने से स्वास्थ्य संबंधी कई फायदे होते हैं। अगर आप नियमित रूप से नहीं पढ़ते हैं तो आपको इसे शौक के तौर पर शुरू करना चाहिए। हर दिन एक किताब के कुछ पन्ने पढ़ने की धीरे-धीरे आदत डालें। जल्द ही आपको पढ़ने की ऐसी आदत पड़ जाएगी कि आप मूवी की बजाए किताब पढ़ने को तरजीह देंगे। आइये आज जानते हैं कि रोज पढ़ने से क्या फायदे होते हैं

दिमाग का अभ्यास

पढ़ने में आपके दिमाग का अभ्यास होता है। पढ़ने के दौरान आपका दिमाग जितना उत्तेजित होता है, उतना टी.वी. देखने या रेडियो सुनते वक्त नहीं होता है। और जाहिर सी बात है जब दिमाग का अभ्यास होगा तो दिमाग स्वस्थ भी रहेगा।

बेहतर नींद में मदद

पढ़ने से आप रिलैक्स फील करते हैं इससे सही नींद आती है। वास्तव में इलेक्ट्रॉनिक्स की कृत्रिम लाइट आपके दिमाग को संकेत देती है कि अभी जागने का समय है इसलिए जब आपको सोना हो तो उससे एक घंटे पहले टेलीविजन, सेल फोन या लैपटॉप से परहेज करें और एक किताब उठाकर करीब एक घंटे पढ़ें।

याददाश्त मजबूत होती है

जब आप फिक्शन पढ़ते हैं तो आपका दिमाग कहानी के सभी कैरक्टर, सारी घटनाओं और कहानी के प्लॉट को याद रखता है। यानी रोजाना पढ़ने का मतलब अपनी याददाश्त का अभ्यास कराना है और अभ्यास से चीजें मजबूत होती हैं। इसलिए रोजाना पढ़ने से आपकी याददाश्त

तनाव कम होता है

तनाव के स्तर को कम करने के लिए पढ़ने एक असरदार तरीका है क्योंकि एक अच्छी स्टोरी में आप खो जाते हैं और आपका दिमाग कहीं और चला जाता है। इससे तनाव कम होता है।

मजबूत होती है।

आपको शांत व संयमित करता है

आपको रिलैक्स फील होने के अलावा पढ़ने से आपके अंदर एक तरह की शांति और सुकून का भाव पैदा होता है। स्टडीज में यह बात सामने आई है कि आध्यात्मिक या धार्मिक पुस्तक पढ़ने से ब्लड प्रेशर कम होता है जिससे आप शांत होते हैं।

एकाग्रता बढ़ती है

पढ़ने से आपके अंदर एकाग्रता बढ़ती है क्योंकि जब आप पढ़ रहे होते हैं तो आपका ध्यान एक ही तरफ केंद्रित होता है। आज के जमाने में हमारा दिमाग कई कामों में बंटा होता है, हमें अपना काम करना होता है तो अपने फोन भी चेक करने पड़ते हैं, लोगों से बात करनी पड़ती है। इससे हमारा एकाग्रता स्तर कम होता है और प्रॉडक्टिविटी में गिरावट आती है। हर दिन थोड़े समय तक पढ़ने से इस तरह की चीजों से छुटकारा पाया जा सकता है।

शब्द भंडार बढ़ता है

पढ़ने से ज्ञान के साथ-साथ शब्द भंडार भी

प्रेरणा का स्रोत

इंग्लैंड में की गई एक स्टडी में यह बात सामने आई कि 60 फीसदी प्रतिभागियों का मानना था कि पढ़ने से उनके जीवन में कुछ बेहतर करने के लिए प्रभाव पड़ा है। पढ़ने के दौरान आप कैरक्टर के इमोशन को महसूस करते हैं। इससे आपके अंदर बड़ा बदलाव आता है।

बढ़ती है। पढ़ने के दौरान आपके सामने कई शब्द आते हैं जो आपके दिमाग में स्टोर हो जाते हैं और खुद से आपकी स्पीच का हिस्सा बन जाते हैं। शब्दों का सही भंडार होने से आपकी बात स्पष्ट ढंग से रखने की कला आप में विकसित होती है जो आपके पेशे के लिए फायदेमंद होगा।

विश्लेषण क्षमता में इजाफा

जब आप किताब पढ़ते हैं तो अकसर यह महसूस कर लेते हैं कि अंत में क्या होगा। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि लेखक आपके लिए कई क्लू छोड़ देता है जिसे आपका दिमाग एक साथ जोड़ता है और दिमाग में कहानी के अंत की तस्वीर उभरती है। इस प्रक्रिया से आपकी क्रिटिकल थिंकिंग और ऐनालिटिकल स्किल्स बढ़ती है।

एम.एस.एम.ई. क्या है

इसे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के नाम से जाना जाता है। जानिए इसके ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन से लेकर इसके कार्य प्रणाली के बारे में। एमएसएमई सूक्ष्म, छोटे और मध्यम श्रेणियों के उद्योग में से किसी भी एंटरप्राइज के अंतर्गत आती है। एमएसएमई किसी भी अर्थव्यवस्था की बैकबोन होती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह है की इसके माध्यम से हर तरह का व्यापार एकरूपता के साथ आर्थिक सफल और विकास करता रहे। सूक्ष्म, छोटे और मध्यम उद्योग अधिनियम 2006 उन उद्योग पर लागू किया जाते हैं जो सेवा क्षेत्र में काम कर



एमएसएमई = माइक्रो स्माल मीडियम इन्टरप्राइज (सूक्ष्म, लघु एवं माध्यम उद्यम)

इस स्कीम को भारत सरकार ने कभी धूम-धाम के साथ शुरू किया था ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगो को अपने पैरो पर खड़ा किया जा सके।

सूक्ष्म उद्योग

माइक्रो उद्योग सबसे छोटी उद्योग इकाई होती है इसके अंतर्गत संयंत्र और मशीनरी में कम से कम करीब 25 लाख तक का निवेश हो सकता है और इसके अन्य उद्योग जो सेवा से जुड़े हुए हो उसमे 10 लाख तक का निवेश कर सकते हैं।

लघु उद्योग

लघु उद्योग के अंतर्गत संयंत्र और मशीनरी में करीब 25 लाख से लेकर 5 करोड़ तक निवेश कर सकते हैं। अन्य उद्योग में 10 लाख से 2 करोड़ रुपए तक का निवेश करना पड़ सकता है।

मध्यम उद्योग

मध्यम उद्योग के अंतर्गत मशीनरी और अन्य संयंत्रों में निवेशक को करीब 5 करोड़ से 10 करोड़ तक का निवेश करना पड़ेगा। और अन्य सेवा उद्योग में 2 करोड़ से 5 करोड़ तक निवेश करना पड़ेगा।

एमएसएमई में रजिस्ट्रेशन के लिए दस्तावेज की आवश्यकता



●पैन कार्ड ●आधार कार्ड ●पासपोर्ट साइज फोटो
ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कैसे करे

एमएसएमई में रजिस्ट्रेशन दो तरह से होता है एक ऑफलाइन मोड और दूसरा ऑनलाइन मोड में। ऑनलाइन आवेदन भरने के लिए और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप ऑफिशियल

वेबसाइट पर जाकर इसके द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों को फॉलो कर सकते हैं।

एमएसएमई का कार्यालय

टोल फ्री नम्बर - 1800-180-6763

एमएसएमई का कार्यालय -
mailto:dc-msme@nic.in

बैंकों और वित्तीय संस्थानों से जुड़े मामलों पर निर्णय लेने का अधिकार दिया गया..

बैंकिंग साख: नितिन देसाई मामले से कुछ नए सबक

● तमाल बंधोपाध्याय

एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) के चेयरमैन और कुछ वरिष्ठ अधिकारियों ने अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी (एफआ-ईआर) के खिलाफ पिछले सप्ताह बंबई उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है।

रायगड पुलिस ने इस महीने के शुरू में भारतीय फिल्म उद्योग के मशहूर कला निर्देशक नितिन देसाई की आत्महत्या के मामले में यह प्राथमिकी दर्ज की थी। इस अपील पर शुक्रवार को सुनवाई होगी।

पुलिस ने देसाई को आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) द्वारा नियुक्त समाधान पेशेवर के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज की है। कहा जा रहा है कि देसाई ऋण नहीं लौटा पा रहे थे और उन्हें इसके लिए उक्त एनबीएफसी परेशान एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रही थी। इससे आजिज होकर देसाई ने आत्महत्या कर ली। पुलिस इस मामले में दर्ज शिकायत के आधार पर कार्रवाई कर रही है और उसे तहकीकात करने का पूरा अधिकार है।

भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 306 के अंतर्गत आत्महत्या के लिए उकसाने या विवश करने के लिए दंड का प्रावधान है। इस धारा के इस्तेमाल का इतिहास सरल नहीं रहा है। अब इसका इस्तेमाल ऋणदाता एवं समाधान पेशेवर के खिलाफ भी हो रहा है।

देसाई मामले में यह स्थापित करना जरूरी है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह ने एक खास इरादे से किसी अमुक व्यक्ति को आत्महत्या के लिए उकसाया या विवश किया या नहीं। क्या कानून सम्मत प्रावधानों का इस्तेमाल कर एक न्यायिक इकाई के तहत किसी एनबीएफसी द्वारा ऋणों की वसूली का प्रयास मानसिक रूप से

परेशान करना या आत्महत्या के लिए उकसाने वाला माना जाना चाहिए? क्या ऋण शोधन अक्षमता कार्रवाई के विकल्प का इस्तेमाल कर फंसे ऋण को वसूलना जायज नहीं है?

एनसीएलटी एक अर्द्ध न्यायिक मध्यस्थता



पंचात है, जिसकी स्थापना केंद्र सरकार ने भारतीय कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 408 के अंतर्गत की है। इसे कंपनियों, बैंकों और वित्तीय संस्थानों से जुड़े मामलों पर निर्णय लेने का अधिकार दिया गया है। अगर कोई कर्जधारक ऋण अदा करने में चूक करता है तो बैंकों एवं गैर-वित्तीय कंपनियों के पास एनसीएलटी में अपील करने का विकल्प रहता है।

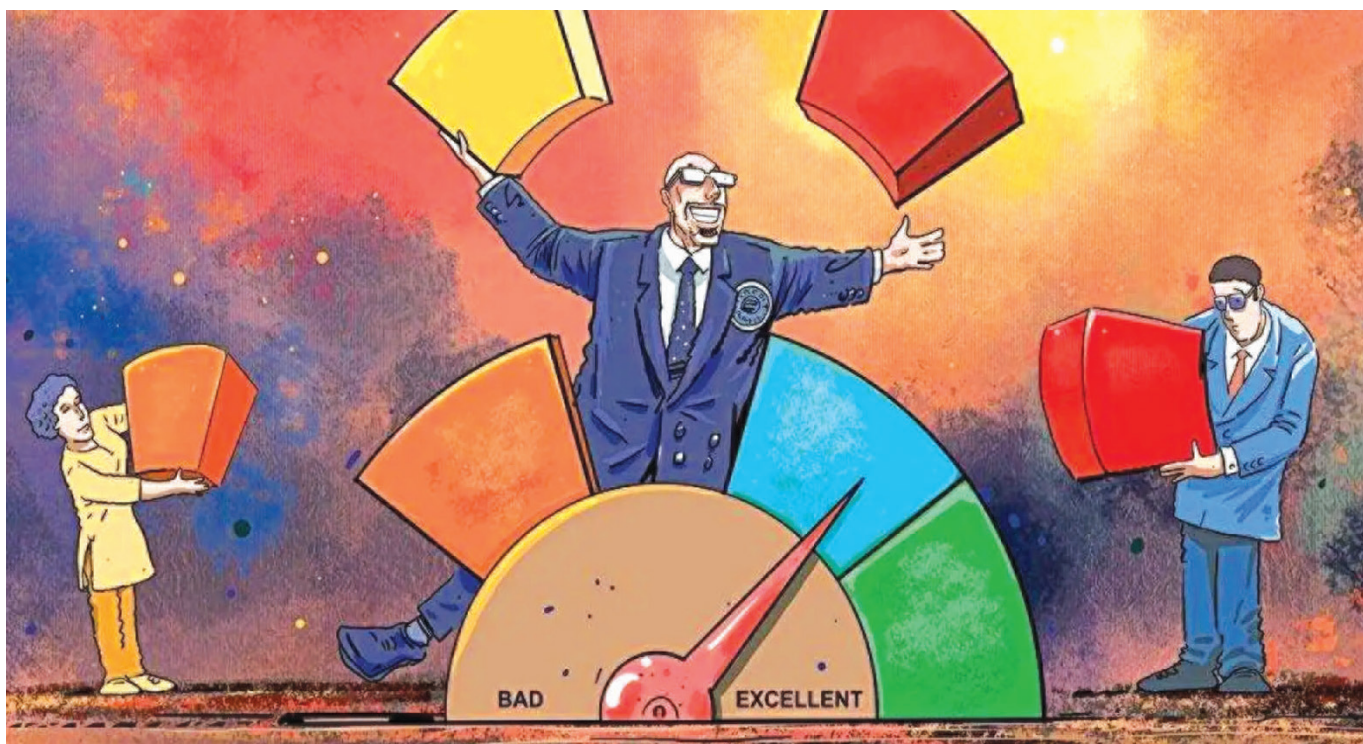
एनसीएलटी ऋण शोधन अक्षमता एवं दिवालिया संहिता (आईबीसी), 2016 के अंतर्गत निगमित ऋण शोधन अक्षमता समाधान प्रक्रिया की शुरुआत करता है। आईबीसी के तहत भुगतान में चूक का मतलब किसी देनदारी का भुगतान करने में असफल रहना है। कई लोग जो अपने आवास ऋण की मासिक किस्त नहीं

देसाई की कंपनी आर्ट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड 2002 में स्थापित हुई थी। नवंबर 2016 में देसाई ने उक्त एनबीएफसी से 150 करोड़ रुपये के ऋण के लिए समझौता किया।

चुका पाते हैं तो बैंक अपनी रकम वसूलने के लिए उनके घरों की नीलामी कर देते हैं। अगर आत्महत्या करना और आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप को एक विकल्प के रूप में देखा गया तो ऋण देने एवं इनकी अदायगी के स्थापित ढांचे में विकृति नहीं आएगी?

एनसीएलटी के निर्णय सदैव कर्जदाताओं के पक्ष में नहीं आते हैं। उदाहरण के लिए पिछले सप्ताह एनसीएलटी ने जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज लिमिटेड का कल्बर मैक्स एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड) के साथ विलय को हरी झंडी दे दी।

न्यायाधिकरण के मुंबई पीठ ने प्रस्तावित विलय पर सारी आपत्तियां खारिज कर दी। इस विलय के खिलाफ ऐक्सिस फाइनेंस लिमिटेड, जे सी



फ्लावर्स एसेट रिकंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड, जे सी फ्लावर्स एसेट रिकंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड, आईडीबीआई बैंक, आईमैक्स कॉर्पोरेशन और आईडीबीआई ट्रस्टीशिप सर्विसेस लिमिटेड ने आपत्ति जताई थी।

भारत में अब तक व्यक्तिगत ऋण शोधन अक्षमता एवं दिवालिया कानून पूरी तरह स्थापित नहीं हो पाया है। दिवालिया प्रक्रिया शुरू करने से पहले व्यक्तिगत दिवालिया के संबंध में ऋण निपटान के लिए क्या अमेरिका की तरह भारत में भी एक संस्थागत निपटान प्रणाली होनी चाहिए? अगर भारत में वकील सहित वित्तीय क्षेत्र के अनुभवी लोगों से लैस एक ढांचा होता तो देसाई जैसी घटना टाली जा सकती थी।

असफल कारोबार और असफल कारोबारी यो दो अलग-अलग चीजें हैं। किसी कारोबार के विफल होने के कई कारण हो सकते हैं। उद्यमी इन कारणों का विश्लेषण कर सीखता है और नए तरीके से कारोबार दोबारा शुरू करता है। ऐसे वित्तीय संकट और कारोबारी विफलताओं से निकलना किसी उद्यमी की एक प्रमुख पहचान होती है।

देसाई मामले से सीख यह मिलती है कि कारोबार विफल हो सकते हैं या चुनौतियों का सामना कर सकते हैं मगर यह उद्यमी की क्षमता या उसकी कमजोरी का प्रमाण नहीं होता है।

कारोबार में विफलता और ऋण नहीं चुकाने में असमर्थता किसी की भावना पर गहरा चोट कर सकती है। हमें कारोबारी विफलताओं को बदनामी के रूप में बिल्कुल नहीं देखना चाहिए, खासकर ऐसे समय में जब पूरे देश में एक के बाद एक स्टार्टअप इकाइयां खड़ी हो रही हैं और चुनौतियां भी साथ ही चलती हैं।

देसाई की कंपनी आर्ट वर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड 2002 में स्थापित हुई थी। नवंबर 2016 में देसाई ने उक्त एनबीएफसी से 150 करोड़ रुपये के ऋण के लिए समझौता किया। 2018 में 35 करोड़ रुपये के एक और ऋण के लिए समझौता हुआ मगर मंजूर रकम में केवल 31 करोड़ रुपये आर्वाटित हो पाए। इससे ऋण की कुल रकम बढ़कर 181 करोड़ रुपये हो गई।

इन दोनों ऋणों के लिए देसाई और उनकी पत्नी ने शेयरों की पेशकश की थी। ऋण भुगतान में देरी के बाद मई 2022 में एनबीएफसी ने देसाई को पूरा ऋण चुकाने के लिए नोटिस भेज दिया। उस समय पहले ऋण के मामले में कुल बकाया रकम 200 करोड़ रुपये से अधिक हो गई थी और दूसरे ऋण के मामले में यह 47.77 करोड़ रुपये थी। जून 2022 तक कुल बकाया रकम बढ़कर 252.49 करोड़ रुपये हो गई थी।

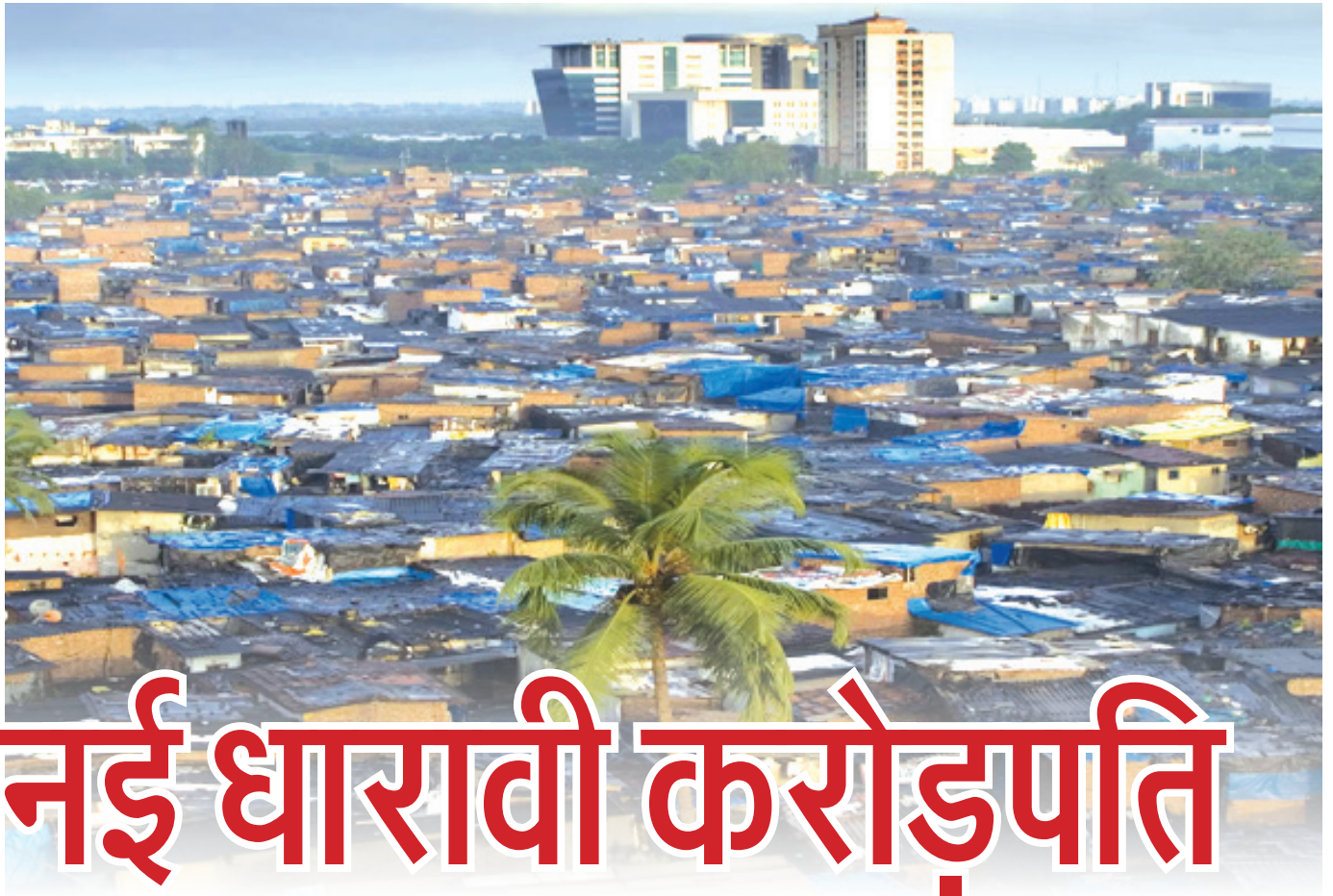
एनसीएलटी ने 25 मई को अपने आदेश में कहा कि कंपनी (कर्जधारक) ह्यऋण या भुगतान

में चूकल किसी पर भी सवाल खड़ा नहीं कर रही है और न ही ऋण शोधन अक्षमता के लिए ह्यकर्जदाता आवेदन खारिज करने के लिए कोई वैध कानूनी आधार नहीं दे पाई है। एनसीएलटी ने आर्ट वर्ल्ड के खिलाफ ऋण शोधन अक्षमता शुरू करने का आदेश जारी कर दिया।

देसाई ने इस आदेश के खिलाफ अपील की मगर राष्ट्रीय कंपनी विधि अपील न्यायाधिकरण के नई दिल्ली में प्रमुख पीठ ने 1 अगस्त को उनकी अपील खारिज कर दी। देसाई ने इसके तत्काल बाद आत्महत्या कर ली। मुझे अंदाजा नहीं ऋण पर कितना ब्याज जमा हो गया था और कर्जदाता ने ऋण वसूली के लिए देसाई को परेशान किया था या नहीं। पहली नजर में तो यही लगता है कि इस मामले में उपयुक्त कानूनी प्रक्रिया का पालन हुआ है।

न्यायालय प्राथमिकी पर विचार करेगा मगर देसाई की अफसोसनाक मौत पर कोई राजनीति भी नहीं होनी चाहिए। समय-समय पर केंद्र एवं राज्य सरकार ऋण माफ करती रहती है। हमें देश में ऋण आवंटन एवं इसकी अदायगी के ढांचे को नुकसान पहुंचाने के लिए कर्जधारकों को एक और जरिया नहीं देना चाहिए।

(लेखक जन स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड में वरिष्ठ सलाहकार हैं)



नई धारावी करोड़पति

पैदा करेगी, स्लमडॉग नहीं : गौतम अदाणी



● गौतम अदाणी

पूर्व हैवीवेट विव्हा बाँक्सिंग चैम्पियन माइक टायसन एक समय अपने जीवनकाल में भारत के दो स्थानों पर जाने के

लिए विशेष तौर पर इच्छुक

थे. एक ताजमहल और दूसरा धारावी.

दुनिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती के तौर पर पहचान रखने वाली धारावी से मेरा पहला वास्ता ह्य70 के दशक के अंत में तब पड़ा, जब देश के तमाम युवाओं की तरह मैंने भी जीवन में कुछ कर गुजरने का सपना लिए मुंबई में कदम रखा. यह सपना हीरों के कारोबार में कुछ बड़ा कर दिखाने का था. आपाधापी के उस दौर में ही मेरा वास्ता धारावी से भी पड़ा. एक ऐसा रहवासी

इलाका, जहां इंसानों की भीड़ घोर अमानवीय और प्रतिकूल परिस्थितियों में रहते हुए अपने आपको और अपने सपनों को ज़िन्दा रखने के लिए लगातार संघर्षरत रहती है. उस समय भी धारावी एक ऐसा जन समुद्र था, जिसमें देशभर की विविध मान्यताएं, संस्कृतियां और भाषाएं मिलती जाती थीं और फिर एकसार भी हो जाती थीं. ह्यगुदड़ी के लालहू की तर्ज पर यहां की बेहद संकरी और लगभग हवाविहीन गलियों में आहत और अर्चभित कर देने वाले दृश्य आम हैं. यहां रहने वालों से आपके सवाल का उत्तर देश की किसी भी भाषा में तुरंत मिल जाएगा, लेकिन उन्हें साफ-सफाई, शुद्ध पानी और स्वच्छ हवा यहां कब मिलेगी, इसका उत्तर दशकों तक उन्हें नहीं मित्रा.

धारावी की इस हकीकत ने मुझे हमेशा प्रेरित और परेशान दोनों रखा. दरअसल, यह जीवन

की जमीनी सच्चाई से परिचय का बड़ा अवसर रहा. इंसानी जीवन किन विषमताओं, परेशानियों, कठिनाइयों से गुजरता हुआ अपने वजूद को बचाने और संवारने के लिए किस हद तक संघर्ष कर सकता है, यह धारावी की गलियों से गुजरकर सहजता से जाना जा सकता है. धारावी दुनिया में ख्यात है, लेकिन सकारात्मक नहीं, नकारात्मक लिहाज से. दुनिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती कहलाना हमारे लिए लज्जा का विषय है. वहां नारकीय जीवन जी रहे लोगों को इस त्रासदी से उबारने की ज़िम्मेदारी सरकार और समाज के सामर्थ्यवान तबके को मिलकर उठानी ही चाहिए, यह विचार मेरे दिमाग में तब-तब हथौड़े की तरह बजता था, जब-जब मैं विमान से मुंबई एयरपोर्ट पर उतर रहा होता था.

लेकिन कब और कैसे...? इस सवाल का उत्तर खोज पाने में असफलता ही हाथ लगती थी. देश

प्रगति के नए मुकाम हासिल करता रहेगा और धारावी में हालात बद से बदतर होते रहेंगे...? ये लाखों परिवार क्या ऐसा ही नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर रहेंगे...? मानवीय गरिमा क्या सपने तक ही सीमित रहेगी...? ऐसे तमाम सवालों का जब जवाब देने का समय आया, तो बिना किसी झिझक के हमने कदम बढ़ा लिया. सरकार ने धारावी के कायाकल्प को लेकर जैसे ही कार्यक्रम को प्रस्तुत किया, तो मुंबई से अत्यधिक लगाव और इस इलाके के हालात को लेकर दशकों से मन में मौजूद बेचैनी का नतीजा था कि हमने अन्य के मुकाबले बहुत ज्यादा बोली लगाकर इस परियोजना को हासिल किया.

यह हमारे लिए सिर्फ एक व्यापारिक परियोजना नहीं है, बल्कि उससे कहीं बढ़कर है. सच कहूं, तो इसके माध्यम से समाज को वह सब कुछ लौटाने का विनम्र प्रयास है, जो हमारे समूह ने विगत दशकों में समाज से ही प्राप्त किया है.

इस पुनर्वास कार्यक्रम के माध्यम से देश की संवेदनशीलता का नया अध्याय शुरू हो रहा है. यह हम सबके दृढ़ संकल्प और प्रयास से मानवीय गरिमा, सुरक्षा और समावेश वाली एक नई धारावी के निर्माण करने का ऐतिहासिक अवसर है. अब जबकि हम इस पूरी तरह अनजान सफर, लेकिन निर्धारित लक्ष्य पर आगे बढ़ने की शुरुआत कर रहे हैं, हमें आगे आने वाली भारीभरकम चुनौतियों का पूरा अहसास है. कुछ लोग इस परियोजना की तुलना 1960 के दशक में सिंगापूर के आवास संकट को हल करने में सफल रहे ट्रेलब्लेजिंग प्रोजेक्ट से करते हैं, लेकिन धारावी तीन कारणों से अपने आप में एक अनूठा प्रोजेक्ट है.

.....

* सबसे पहली बात यह कि यह दुनिया के सबसे बड़े शहरी पुनर्वास और पुनरुद्धार प्रोजेक्टों में से है. इसमें लगभग 10 लाख लोगों का पुनर्वास किया जाना है. 10 लाख तो विश्व के तमाम महत्वपूर्ण शहरों की आबादी तक नहीं होती है.

* दूसरा यह कि इस दौरान न सिर्फ आवासीय इकाइयों, बल्कि विभिन्न आकार और पैमानों के अलग-अलग व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का पुनर्वास भी होगा. धारावी में जीवन निर्वाह के लिए चल रहे तमाम काम-धंधों के पूरे परिवेश और कारोबारी ताने-बाने को व्यवस्थित किया जाएगा, ताकि वह और बेहतर अवसर व साधनों के साथ जीवन जी सके.

* तीसरा, प्रोजेक्ट का लक्ष्य व्यापक और समग्र पुनर्विकास का होगा, क्योंकि इसमें पात्र और अपात्र, दोनों तरह के निवासियों की आवास और पुनर्वास संबंधी जरूरतों को पूरा किया जाएगा.

.....

* सबसे पहली बात यह कि यह दुनिया के सबसे बड़े शहरी पुनर्वास और पुनरुद्धार प्रोजेक्टों में से है. इसमें लगभग 10 लाख लोगों का पुनर्वास किया जाना है. 10 लाख तो विश्व के तमाम महत्वपूर्ण शहरों की आबादी तक नहीं होती है.

* दूसरा यह कि इस दौरान न सिर्फ आवासीय इकाइयों, बल्कि विभिन्न आकार और पैमानों के अलग-अलग व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का पुनर्वास भी होगा. धारावी में जीवन निर्वाह के

लिए चल रहे तमाम काम-धंधों के पूरे परिवेश और कारोबारी ताने-बाने को व्यवस्थित किया जाएगा, ताकि वह और बेहतर अवसर व साधनों के साथ जीवन जी सके.

* तीसरा, प्रोजेक्ट का लक्ष्य व्यापक और समग्र पुनर्विकास का होगा, क्योंकि इसमें पात्र और अपात्र, दोनों तरह के निवासियों की आवास और पुनर्वास संबंधी जरूरतों को पूरा किया जाएगा.

हम एक ऐसे विश्वस्तरीय उपनगर का निर्माण





कनेक्शन

करेंगे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल और प्रेरणा का कारण रहे. 21वीं सदी भारत की सदी है, इसका अहसास इस परियोजना से दुनिया को हो सकेगा.

हम एक ऐसा संस्थागत तंत्र बनाने का प्रयास करेंगे, जिससे न सिर्फ धारावी के लोगों की, बल्कि अपनी-अपनी असीमित प्रतिभा और जीवट के लिए ख्यात प्रत्येक मुंबईकर की भावनाओं को धारावी के कायाकल्प की इस यात्रा में सहज रूप से जोड़ सकें. नई धारावी, पुरानी धारावी की मौलिकता और सामूहिकता की भावना को नष्ट किए बिना मुंबई के सर्वोत्कृष्ट चरित्र - भावना, धैर्य, एकता, विविधता, रंग और दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित करेंगी.

हम धारावी में जीवन और जीविका, दोनों को व्यवस्थित करने की समग्र रूप से शुरूआत कर रहे हैं. यह मेरी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है कि धारावीवासियों के घरों में जो आज नहीं है - वह गैस, पानी, बिजली, साफ-सफाई और जल निकासी, स्वास्थ्य देखभाल और मनोरंजन की सुविधाएं और खुली जगह - हम मुहैया कराएंगे. हम धारावीवासियों के लिए विश्वस्तरीय अस्पताल और स्कूल, दोनों की व्यवस्था भी करेंगे. धारावीवासी अपने पुराने घरों से तभी स्थानांतरित होंगे, जब उनके रहने की वैकल्पिक व्यवस्था तैयार होगी. अभी गलियों में घुसते ही नाक पर रूमा ल रखने को विवश कर देने वाली सड़ांध भरी धारावी अतीत का हिस्सा बन गुम हो जाएगी, इसके स्थान पर एक नई धारावी जन्म लेगी, जो गर्व से गुणगुनाएगी.

पुनर्वास के साथ आजीविका भी बड़ी चुनौती है. हम यहां मौजूद तमाम छोटे-छोटे उद्योगों को समर्थन और सुदृढ़ता देकर धारावी का कायाकल्प एक आधुनिक बिजनेस हब के रूप में करना चाहते हैं. इस कार्य हेतु नए जमाने की नौकरियों के लिए इन लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा, जिसमें युवाओं और महिलाओं पर मुख्य फोकस होगा. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञों और सिविल सोसायटी की मदद लेकर बहु-आयामी रणनीति को अमल में लाया जाएगा. इसमें कौशल विकास आधारित ट्रेनिंग सेंटर, उत्पाद केंद्रित और सेवा केंद्रित उद्यमिता मॉडल्स के लिए साझे सुविधा केंद्र, आरएंड-डी सेंटर, डेटा सेंटर और एमएसएमई हेल्पडेस्क आदि का समन्वय होगा.

धारावी के कायाकल्प के प्रयास नए नहीं हैं, बल्कि इनका लगभग आधी शताब्दी लम्बा इतिहास है. इस बार, पहले के अनुभवों के आधार पर टेंडर डिजाइन में किए गए कुछ स्मार्ट बदलावों ने बोली लगाने वालों की भागीदारी और इसके सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया है. उदाहरण के लिए, इस टेंडर में अपात्र किरायेदारों के पुनर्वास की भी व्यवस्था है. धारावी से सटी रेलवे की 45 एकड़ भूमि को शामिल करने से पात्र लोगों का वहीं के वहीं पुनर्वास सुनिश्चित हो सका है और प्रोजेक्ट रीडेवलमेंट का काम तत्काल शुरू किया जाना संभव हो रहा है.

यह उल्लेखनीय है कि यह ऐतिहासिक प्रोजेक्ट महाराष्ट्र की विभिन्न राज्य सरकारों एवं राज्य के सभी राजनीतिक दलों तथा वर्तमान केंद्र स-

रकार, जिसने रेलवे की जमीन उपलब्ध कराई, के समर्थन और सक्रिय सहयोग का परिणाम है.

हमारी टीम को और मुझे अहसास है कि धारावी प्रोजेक्ट का डिजाइन और कार्यान्वयन एक चुनौती है, जो बहुत विशाल स्तर की है. हम यह भी जानते हैं कि यह प्रोजेक्ट हमारे लचीलेपन, हमारी क्षमता और हमारे निष्पादन कौशल के अंतिम बिन्दु तक की परीक्षा होगा. इतने वर्षों में, अदाणी समूह ने अपनी अत्यधिक प्रेरित, अनुभवी और ऊर्जावान टीम की मदद से एक समाधान-परक संस्कृति विकसित की है. मुझे विश्वास है कि सभी हितधारकों के समर्थन के साथ हम इतिहास रचेंगे और धारावी, मुंबई और भारत को गौरवान्वित करेंगे.

हमारा काम पूरा होने के बाद, अगर माइक टायसन फिर धारावी का दौरा करते हैं, तो वह उस धारावी को पहचान नहीं पाएंगे, जो उन्होंने पहले देखी थी. लेकिन मुझे विश्वास है कि उन्हें धारावी की आत्मा फिर भी हमेशा की तरह जीवंत मिलेगी. ईश्वर ने चाहा तो डैनी बॉयल जैसे लोगों को पता चल जाएगा कि नई धारावी करोड़पति पैदा कर रही है, वह भी स्लमडॉग कहलाए बिना. जिन्हें हमारे इस भरोसे पर शक है, तो उनके लिए तमाम भारतवासियों की ओर से प्रख्यात कवि दुष्यंत कुमार की यह पंक्तियां...

हूकैन कहता है, आसमान में सुराख हो नहीं सकता...

एक पत्थर तो जरा तबीयत से उछल्यो यारों...हू लेखक अदाणी समूह के चेयरमैन हैं... चाहता हूँ।



FY24 में 10 प्रतिशत तक बढ़ेगा अस्पताल

क्षेत्र का राजस्व

ज इक्रा को उम्मीद है कि उसके अस्पताल उद्योग के नमूना समूह के मामले में वित्त वर्ष 24 के दौरान कुल ऑक्ज्यूपेंसी 60 से 65 प्रतिशत की दर पर दमदार रहेगी।

अंजलि सिंह

रेटिंग एजेंसी इक्रा (कूरे) को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 24 में अस्पताल उद्योग के राजस्व में आठ से 10 प्रतिशत का इजाफा होगा। जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों में वृद्धि, अधिक जागरूकता और स्वास्थ्य बीमा की पहुंच के कारण ऐसा होने के आसार हैं। जबकि लागत संबंधित कुशल प्रबंधन और परिचालन नियंत्रण की वजह से परिचालन मार्जिन लगभग 22 प्रतिशत रहने की उम्मीद है।

इक्रा के इस नमूना समूह में नौ सूचीबद्ध कंपनियों के अस्पताल कारोबार शामिल हैं। यह हैं झ अपोलो हॉस्पिटल्स एंटरप्राइज लिमिटेड, एस्टर डीएम हेल्थकेयर लिमिटेड (केवल भारतीय कारोबार), फोर्टिस हेल्थकेयर लिमिटेड,

.....
इक्रा को उम्मीद है कि उसके अस्पताल उद्योग के नमूना समूह के मामले में वित्त वर्ष 24 के दौरान कुल ऑक्ज्यूपेंसी 60 से 65 प्रतिशत की दर पर दमदार रहेगी।
.....

हेल्थकेयर ग्लोबल एंटरप्राइजेज लिमिटेड, कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज लिमिटेड, मैक्स हेल्थकेयर इंस्टीट्यूट लिमिटेड, नारायण हृदयालय लिमिटेड, रेनबो चिल्ड्रन्स मेडिकेयर लिमिटेड और शाल्वी लिमिटेड।

इक्रा को उम्मीद है कि उसके अस्पताल उद्योग के नमूना समूह के मामले में वित्त वर्ष 24 के दौरान कुल ऑक्ज्यूपेंसी 60 से 65 प्रतिशत की

दर पर दमदार रहेगी। स्वास्थ्य सेवाओं की निरंतर मांग और संगठित कंपनियों के बीच चल रहे बाजार हिस्सेदारी विस्तार की वजह से यह पिछले वर्ष की 65.1 प्रतिशत की दर पर आधारित है।

अधिक आधार के मद्देनजर वित्त वर्ष 23 में 10 प्रतिशत की वृद्धि के बाद वित्त वर्ष 24 में प्रति बिस्तर औसत राजस्व (एआरपीओबी) में पांच से सात प्रतिशत की औसत वृद्धि की उम्मीद है।

इक्रा के सहायक उपाध्यक्ष और क्षेत्र प्रमुख एम माचेरला ने कहा कि मांग में निरंतर सुधार से समर्थित इक्रा के नमूना समूह वाली कंपनियों ने अगले चार वर्षों में 8,400 से अधिक बिस्तरों और उन्नयन/नवीनीकरण योजना के साथ बड़े स्तर पर विस्तार योजनाओं की घोषणा की है। इसका मतलब यह है कि मार्च 2023 के स्तर के मुकाबले क्षमता में 26 प्रतिशत से अधिक का इजाफा हो रहा है।

योग गुरु बाबा रामदेव से जानें कुछ महत्वपूर्ण योगासन

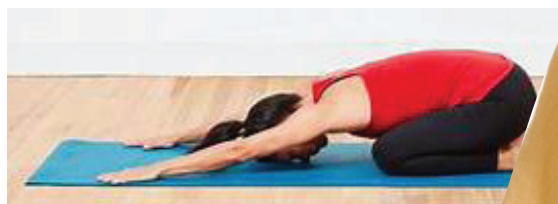


योग से आप तनाव, चिड़चिड़ापन से आसानी से निजात पा सकते हैं। इसके लिए आपको थोड़ा समय योग और अपने खानपान का ध्यान रख तनाव से निजात पा सकते हैं। योगगुरु बाबा रामदेव ने जानिए कैसे तनाव से छुटकारा पा सकते हैं।

वजन कम करने को करें

भुजंगासन व बालासन

वजन को कम करने का न्यू ईयर रेजोल्यूशन लेने जा रहे तो उसे निभाएं भी। यदि पेट की चर्बी कम करने की ठानी है, तो आप भुजंगासन करें। यह आसानी से वजन कम करके पेट को अंदर कर देगा। इसे



करने से वजन बहुत जल्दी कम होने लगता है। भुजंगासन को करने के लिए पेट के बल लेट जाएं। अब अपने दोनों हाथों को माथे के नीचे टिकाएं। दोनों पैरों के पंजों के साथ रखें। फिर अपने माथे को ऊपर ऊठाएं और दोनों बाजुओं को कंधों के समान लाएं। ऐसा करने पर शरीर का सारा भार बाजुओं पर पड़ेगा। अब शरीर के अगले भाग को बाजुओं के सहारे ऊपर उठाएं। शरीर को स्ट्रेच करके लंबी सांस लें। कुछ समय तक इस आसन को करें। फिर दोबारा पेट के बल लेट जाएं।

बालासन करने का तरीका

बढ़ते वजन से आज सभी परेशान हैं। खासकर, कम उम्र में ही पेट बाहर निकल जाने से लोग और भी ज्यादा परेशान हो जाते हैं। नये साल में आकर्षक और दुबले बनना चाहते हैं, तो हेल्दी डाइट के साथ ही योग, एक्सरसाइज का नियमित अभ्यास करना शुरू कर दें। योग में बालासन करने से आपके पेट की चर्बी कम होगी। इस आसन को करने के लिए घुटनों के बल बैठ जाएं। कमर बिल्कुल सीधी रखें। अब गहरी सांस लेते हुए शरीर के ऊपरी हिस्से को सामने की ओर झुकाएं। दोनों हाथ पीछे की ओर रखें और

कोशिश करें कि सिर सामने जमीन को छुए। अब जितना हो सके उतनी देर इसी अवस्था में रहने की कोशिश करें। फिर सांस छोड़ते

हुए शरीर के ऊपरी भाग को उठाते हुए फिर से वज्रासन की मुद्रा में आ जाएं।

दिल को निरोग रखे वृक्षासन

दिल शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से



एक है। आजकल अनहेल्दी डाइट, प्रदूषण और तनाव की वजह से बहुत सारे लोग कम उम्र में ही दिल की बीमारियों का शिकार बन रहे हैं। दिल को हेल्दी बनाने के लिए जब आप कोई आसन करते हैं, तो उस दौरान आप सांसों तेजी से लेते हैं जिससे दिल तेजी से धड़कता है। इससे रक्त संचार बेहतर तरीके से होता है। यदि आप दिल को स्वस्थ रखना चाहते हैं, तो वृक्षासन करें। इस आसन को 'ट्री पोज' भी कहते हैं। इस आसन में व्यक्ति पेड़ के समान मुद्रा बनाता है। यह आसन व्यक्ति के दिमाग को शांत रखता है और शरीर को हड़ बनाता है, जो कि दिल को स्वस्थ रखने के लिए बहुत जरूरी है।

त्वचा को ग्लोइंग, आकर्षक बनाके के लिए सर्वांगासन

चाहती हैं नए साल में आपके चेहरे की चमक यूँ ही बरकरार रहे, स्किन हेल्दी रहे, तो सर्वांगासन करें। इस आसन मुँहासे और पिंपल्स से छुटकारा दिलाता है। इसे करने के लिए सीधे पीठ के बल लेट जाएं। दोनों हाथों को सीधा रखें। दोनों पैरों को कमर के पास से मोड़ें और ऊपर करें। इसके बाद अपने दोनों हाथों से पीठ को सहारा देते हुए उठाएं। अपने पैरों को अधिकतम ऊँचाई तक ऊपर करें। इस स्थिति में आपकी रीढ़ की हड्डी और पैर एक सीधी रेखा में रहने चाहिए-ए। आपके शरीर का पूरा वजन कन्धों पर होगा। दोनों हाथ पीठ को ऊपर की ओर सीधा रखने में सहायता करेंगे। इस



स्थिति में 30 सेकंड तक रुकें। उसके बाद पैरों को नीचे करते हुए अपनी प्रारंभिक अवस्था में आ जाएं।

तनाव मुक्त और मानसिक शांति के लिए करें सुखासन

आज के अधिकतर युवाओं में तनाव, डिप्रेशन, चिंता और किसी ना कि सही तरह की मानसिक समस्याएं घर करती जा रही हैं। पढ़ाई का दबाव, अच्छे नंबरों से पास होकर कुछ अच्छा बनने का दबाव इतना बढ़ता जा रहा है स्कूली और कॉलेज गोइंग युवाओं पर कि वो कम उम्र में ही अनहेल्दी मेंटली और फिजिकली रहने लगे हैं। यदि युवा हेल्दी और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, तो विद्यार्थियों और युवाओं को नियमित रूप से योग करना चाहिए। मानसिक शांति पाने और तनाव मुक्त रहने का

इससे बेहतर तरीका कोई और नहीं है।

योग पढ़ाई के प्रेशर का कम करने के साथ एकाग्रता को भी बढ़ाता है। साथ ही तनाव और अवसाद से भी छुटकारा दिलाकर मेंटली रिलैक्स करने में मदद करता है।

रिलैक्स, स्ट्रेस फ्री और मेंटली फिट रहने के लिए आप सुखासन योग का अभ्यास करें। इसमें आपको दोनों पैरों को क्रॉस करने के साथ पीठ को सीधा रखकर बैठना होता है। इस आसन में मेडिटेशन भी किया जाता है, लेकिन ध्यान रहे इस आसन में हाथ की मुद्रा भी बहुत जरूरी होती है। ये आसन आपकी ब्रेन पावर को बढ़ाने में कारगर है।

स्वस्थ फेफड़ों के लिए करें ब्रीदिंग एक्सरसाइज

आजकल जिस तरह से वातावरण में प्रदूषण बढ़ गया है, उसका सबसे ज्यादा असर आपके फेफड़ों पर ही होता है। ऐसे में फेफड़ों को हेल्दी रखने के लिए आप ब्रीदिंग एक्सरसाइज का अभ्यास जरूर करें। इसे करने के लिए आपको अपनी सांस पर फोकस करना होता है, जिससे दिमाग शांत और रिलैक्स होता है। इसे करने के लिए 4 सेकंड तक सांस लें, ताकि आपके फेफड़ों में ऑक्सीजन भर जाए। उसके बाद अगले 4 सेकंड तक पूरी भरी हुई ऑक्सीजन को निकाल दें। इसे रोजाना 5 मिनट तक करें।





याददास्त को कैसे बढ़ायें ?

.....

जैसे जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती जाती है तो दिमाग के काम करने की क्षमता कम होती जाती है तो उम्र बढ़ने पर अपनी बुद्धि और याददास्त को कैसे बढ़ाये ? किसी भी उम्र में दिमाग तेज कैसे करें ? दिमाग तेज कैसे करें ? बुद्धि और याददास्त को कैसे बढ़ाये ? इन्हीं सारे सवालों का जबाब हम इस आर्टिकल में जानेंगे।

.....

एक तरफ हमारा दिमाग हमारे पूरे शरीर को कंट्रोल करता है वहीं दूसरी ओर हमारा दिमाग हमारे व्यक्तित्व, हमारी समझ और बुद्धिमत्ता का परिचालक होता है। आप किसी चीज के बारे में क्या, कितना और कैसा सोच पाते हैं और चीजों को कितना याद रख पाते हैं, यह सब डिपेंड करता है की आपका दिमाग कितना तेज है। यह सब जानते हैं की जितनी जानकारी और ज्ञान व्यक्ति प्राप्त करता है उसका दिमाग उतना ही तेज हो जाता है पर जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती है दिमाग कम काम करने लगता है और याददास्त कमजोर होने लगती है। तो आइये जानते हैं की दिमाग तेज कैसे करें ? किसी भी उम्र में अपनी बुद्धि और याददास्त को को कैसे बढ़ाये ?

हर दिन कुछ नया सीखें

हर दिन कुछ नया सीखने के कोशिश करते रहें जिससे दिमाग की क्रियाशीलता बढ़ती रहें। अक्सर देखा गया है की व्यक्ति की उम्र जैसे जैसे बढ़ती जाती है वो सीखना बंद कर देते है व्यक्ति को लगता है कि अब सीखकर क्या फायदा। पर देखा गया है जो व्यक्ति उम्र बढ़ने के साथ साथ भी चीजों को सीखते रहते हैं उनकी बुद्धि तेज और याददास्त भी दुरुस्त रहती है।

व्यायाम और योगा करे

ह मार ।
दिमाग हमारे शरीर का ही एक हिस्सा है। यदि हमारा शरीर ही स्वस्थ नहीं है तो हमारा दिमाग भी स्वस्थ नहीं रह सकता। व्यायाम और योगा द्वारा आप अपने शरीर को लाभ पहुंचाते है जिसका सीधा प्रभाव आपके दिमाग पर पड़ता है और आपका दिमाग तेज और याददास्त तेज हो जाती है।

ध्यान करें

ध्यान से एकाग्रता बढ़ती है और व्यक्ति अपने दिमाग का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर पाता है।

किताबें पढ़ें

जब आप पढ़ते हैं, तो आप न केवल पुस्तक में निहित जानकारी को अवशोषित करते हैं, बल्कि स्वयं पढ़ने का कार्य मस्तिष्क के भीतर संबंध बनाता है जो इसे और अधिक बहुमुखी बनाता है।

लिखें

लेखन कार्य स्मृति और संवाद करने की आपकी क्षमता में सुधार करता है। जितना हो सके लेखन की आदत डालें। आप कहानी लिख सकते हैं, अपनी जीवनी लिख सकते हैं या कुछ भी जो आपको अच्छा महसूस कराये।

संगीत सुनें

अपना मनपसंद और दिमाग को शांत रखने वाला संगीत सुने। चाहें वो कोई गजल हो गीत हो

या भजन। संगीत मस्तिष्क को गहराई से प्रभावित करता है, और इसे बेहतर अनुभूति और स्मृति कार्यप्रणाली से जोड़ा गया है।

पूर्ण और अच्छी नींद लें

एक अच्छी रात की नींद स्वस्थ दिमाग, विशेष रूप से स्मृति के लिए महत्वपूर्ण है। समय पर सोएं और पर्याप्त नींद लें। यदि आवश्यक हो, तो दिन में झपकी भी लें जिससे दिमाग तरोताजा महसूस करता रहेगा।

संतुलित आहार लें

व्यायाम करना, सोना और आराम करने की तरह ही संतुलित आहार लेना भी जरूरी है। भोजन करने का मतलब यह नहीं होता कि आप कुछ भी खा रहे हैं। बेशक, थोड़ा खाएं, लेकिन स्वच्छ और पोषण तत्वों से भरपूर भोजन ही करें। इससे हम बीमारियों से दूर रहते हैं, और दिमाग को भी पोषण आहार मिलता रहता है।

कुछ भी न सोचते रहें

जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती है यह देखा गया है कि व्यक्ति कुछ भी और नकारात्मक बातें सोचता रहता है। उम्र बढ़ने से दिमाग पर जोर पड़ता है और मस्तिष्क जल्दी थकने लगता है। तो आलतू फालतू न सोच कर अपने दिमाग को कुछ नया सीखने, बच्चों को पढ़ाने और अपने रुचि के कार्य करने में व्यस्त रहें।

मेंढकों की टोली

ए क मेंढकों की टोली जंगल के रास्ते से जा रही थी। अचानक दो मेंढक एक गहरे गड्ढे में गिर गये। जब दूसरे मेंढकों ने देखा कि गड्ढा बहुत गहरा है तो ऊपर खड़े सभी मेंढक चिल्लाने लगे तुम दोनों इस गड्ढे से नहीं निकल सकते, गड्ढा बहुत गहरा है, तुम दोनों इसमें से निकलने की उम्मीद छोड़ दो। उन दोनों मेंढकों ने शायद ऊपर खड़े मेंढकों की बात नहीं सुनी और गड्ढे से निकलने की लिए लगातार वो उछलते रहे। बाहर खड़े मेंढक लगातार कहते रहे ह्य तुम दोनों बेकार में मेहनत कर रहे हो, तुम्हें हार मान लेनी चाहियें, तुम दोनों को हार मान लेनी चाहियें। तुम नहीं निकल सकते। गड्ढे में गिरे दोनों मेंढकों में से एक मेंढक ने ऊपर खड़े मेंढकों की बात सुन ली, और उछलना छोड़ कर वो निराश होकर एक कोने में बैठ गया। दूसरे मेंढक ने प्रयास जारी रखा, वो उछलता रहा जितना वो उछल सकता था। बहार खड़े सभी मेंढक लगातार कह रहे थे कि तुम्हें हार मान लेनी चाहियें पर वो मेंढक शायद उनकी बात नहीं सुन पा



रहा था और उछलता रहा और काफी कोशिशों के बाद वो बाहर आ गया। दूसरे मेंढकों ने कहा क्या तुमने हमारी बात नहीं सुनी। उस मेंढक ने इशारा करके बताया की वो उनकी बात नहीं सुन सकता क्योंकि वो बेहरा है सुन नहीं सकता, इसलिए वो किसी की भी बात नहीं सुन पाया। वो तो सोच रहा था कि सभी उसका उत्साह बढ़ा रहे हैं।

कहानी से सीख

1. जब भी हम बोलते हैं उनका प्रभाव लोगों पर पड़ता है, इसलिए हमेशा सकारात्मक बोलें।
2. लोग चाहें जो भी कहें आप अपने आप पर पूरा विश्वास रखें और सकारात्मक सोचें।
3. कड़ी मेहनत, अपने ऊपर विश्वास और सकारात्मक सोच से ही हमें सफलता मिलती है।

चील और मुर्गी



ए क जंगल में बरगद का पेड़ था। उस पेड़ के ऊपर एक चील घोंसला बनाकर रहती थी जहाँ उसने अंडे दे रखे थे। उसी पेड़ के नीचे एक जंगली मुर्गी ने भी अंडे दे रखे थे। एक दिन उस चील के अंडों में से एक अंडा नीचे गिरा और मुर्गी के अंडों में जाकर मिल गया। समय बीता अंडा फूटा और चील का बच्चा उस अंडे से निकला और वह यह सोचते बड़ा हुआ की वो एक मुर्गी है। वो मुर्गी के बांकी बच्चों के साथ बड़ा हुआ। वह उन्ही कामों को करता जिन्हें एक मुर्गी करती है। वो मुर्गी की तरह ही कुड़कुड़ाता, जमीन खोद कर दाने चुगता और वो इतना ही ऊँचा उड़ पाता जितना की एक मुर्गी उड़ती है। एक दिन उसने आसमान में एक चील को देखा जो बड़ी शान से उड़ रही थी। उसने अपनी मुर्गी माँ से पूछा की उस चिड़िया का क्या नाम है जो इतना ऊँचा बड़ी शान से उड़ रही है। मुर्गी ने जबाब दिया वह एक चील है। फिर चील के बच्चे ने पूछा माँ मैं इतना ऊँचा क्यों नहीं उड़ पाता। मुर्गी बोली तुम इतना ऊँचा नहीं उड़ सकते क्योंकि तुम एक

कहानी से सीख

जो भी हम सोचते हैं या कुछ नया करने की कोशिश करते हैं तो दूसरे हमें यह कहकर रोकते हैं कि तुम ऐसा नहीं कर सकते, ऐसा नहीं हो सकता और हम अपना इरादा यह सोचकर बदल लेते हैं कि वाकई मैं यह नहीं कर सकता और हार मान लेते हैं। इसका मुख्य कारण है अपने ऊपर भरोसा न होना, अपनी शक्तिओं पर भरोसा न होना, अपने काम पर भरोसा न होना। दोस्तों जो लोग कहते हैं कहने दीजिये लोगों का काम है कहना, अपने आप पर भरोसा रखें, अपने आप को पहचानें।

मुर्गे हो। उसने मुर्गी की बात मान ली और मुर्गी की जिंदगी जीता हुआ एक दिन मर गया।



जोड़ों का दर्द दूर भगाएगा ये ऑइल

पु राने समय से ही एरण्ड का ऑयल स्वास्थ्य के लिए खास लाभकारी माना जाता रहा है। यह रोगाणुरोधी व एंटी इन्फ्लेमेटरी गुणों से समृद्ध है। अरंडी में पाए जाने वाले एक विशेष प्रकार के फैट, जिसे रिक्विनोइलिक एसिड के रूप में जाना जाता है, का उपयोग कई दवाओं में किया जाता। एरण्ड का ऑयल का उपयोग आपको कई स्वास्थ्य फायदा पहुंचाता है। आइए जानते हैं इसके फायदों के बारे में:-

मुंह की देखभाल

अरंडी का ऑयल गम इन्फेक्शन व रूट कैनाल इन्फेक्शन से आपके मुंह को प्रोटेक्ट करता है। इसके साथ ही डेन्चर से संबंधित स्टामाटाइटिस की समस्या में भी लाभकारी है। इस ऑयल के एंटी-बैक्टीरियल व एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण दांतों के स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। आप ब्रश करते समय इस ऑयल की कुछ बूंदें अपने टूथपेस्ट में मिलाकर इसका लाभ ले सकते हैं।

कब्ज मिटाए

एरण्ड का ऑयल कब्ज को समाप्त करने में सहायक होता है। अरंडी का ऑयल पेरिस्टलसिस को प्रोत्साहित करता है (आंतों के संकुचन जो

ठोस अपशिष्ट को हटाने में सहायता करते हैं)। इसमें पाया जाने वाला रिक्विनोइलिक एसिड एक ताकतवर लैक्सेटिव के तौर पर कार्य करता है व आंतों को उत्तेजित कर, मल को सरलता से बाहर निकाल देता है। आंतों को सुचारू रखने के लिए आप हर प्रातः काल 1 टीएसपी कोल्ड-प्रेस्ड कैस्टर तेल का सेवन करें। स्वाद अच्छा लगे तो आप एक गिलास संतरे या क्रैनबेरी के रस में 1 चम्मच ऑयल मिला सकते हैं।

जोड़ों का दर्द दूर भगाए

अरंडी के ऑयल में पाया जाने वाला एसिड गुणों से भरपूर होता है। यह जोड़ों के दर्द, सूजन व गले की मांसपेशियों को राहत देने में विशेष तौर पर कार्य करता है, खास कर गठिया से पीड़ित लोगों के लिए। इसके लिए ऑयल को सीधे दर्द वाली स्थान पर लगाएं व हीटिंग पैड या गर्म पानी की थैली से ढँक दें।

प्रतिरक्षा को बढ़ावा देता है

प्राकृतिक डॉक्टर मानते हैं कि अरंडी का ऑयल संक्रमण से लड़ने वाली सफेद रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ाकर प्रतिरक्षा को बढ़ाता है। अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन 1 चम्मच अरंडी के ऑयल का सेवन करें।

आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या

सं स्कृत में दैनिक कार्यक्रम को दिनचर्या कहते हैं। दिन का अर्थ है दिन का समय और अर्चा का अर्थ है उसका पालन करना या उसके निकट रहना। दिनचर्या आदर्श दैनिक कार्यक्रम है जो प्रकृति के चक्र का ध्यान रखती है। आयुर्वेद प्रातः काल के समय पर केंद्रित होता है क्योंकि वह पूरे दिन को नियमित करने में महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद यह मानता है कि दिनचर्या शरीर और मन का अनुशासन है और इससे प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है और मल पदार्थों से शरीर शुद्ध होता है। सरल स्वस्थ दिनचर्या से शरीर और मन शुद्ध होते हैं, दोष संतुलित होते हैं, प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है और दिन की शुरुआत ताजगी और पुनार्युवन से होती है। प्रातः काल में सरल दिनचर्या का पालन करने से आप की दिन की शुरुआत आनंदमय होती है। आपकी सुबह ताजगीमय होने के लिये यह मार्गदर्शिका है।

ब्रह्म मुहूर्त

सूर्योदय से डेढ़ घंटे पूर्व उठने से आप सूर्य की लय के साथ समकालिक हो सकते हैं। आयुर्वेद ब्रह्म मुहूर्त की अनुशंसा करता है जिसका अर्थ है ब्रह्म का समय या शुद्ध चेतना या शुभ और प्रातः काल के इस समय उठना सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

श्वास की शक्ति

यह देखे कि कौनसी नासिका से श्वास का प्रवाह अधिक है। आयुर्वेद के अनुसार दाहिनी नासिका सूर्य पित्त है और बाई नासिका चंद्र पित्त है। मस्तिष्क का दाहिना भाग रचनात्मक कार्यों को नियंत्रित करता है और बायां हिस्सा तार्किक और मौखिक कृत्यों को नियंत्रित करता है। शोध के अनुसार जब कोई बाई नासिका से श्वास लेता है तो मस्तिष्क का दाहिना भाग अधिक हावी होता है और इसका विपरीत भी।

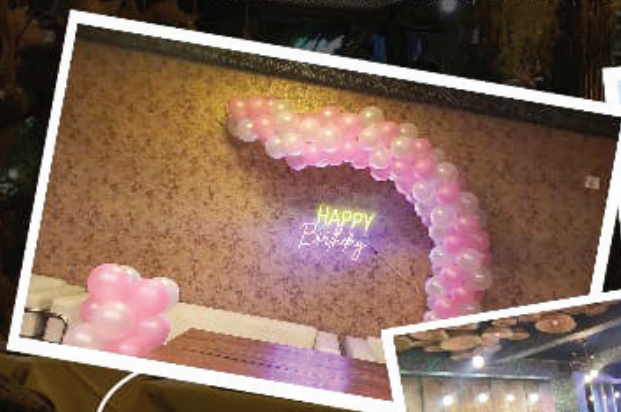


7048967523

Special Discount GRAND OPENING

New Restaurant Branch

You can organize wedding, reception, ring ceremony, birthday, anniversary, haldi, bachelor parties, corporate parties, kitty parties, music facilities are available here, dance floor is available.



STAGE
AVAILABLE

200 PERSON'S
SEATING
AVAILABLE

ROOF TOP

Book Now

2nd floor, Aggarwal Plaza, Near
gulmohar garden, rajnagar Extension,
GZB

7048967523



Cafe
Restaurant,
Party Hall

Open
NOW



START AT

11.00 AM - 11.00 PM

2ND FLOOR, AGGARWAL PLAZA, NEAR ORA
CHAIMERAMKET, RAJNAGAR EXTENSION

@darkhousecafe

Thedarkhousecafe@gmail.com

7048967523